www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सचित्र बाल कथाएँ

अमृत कण

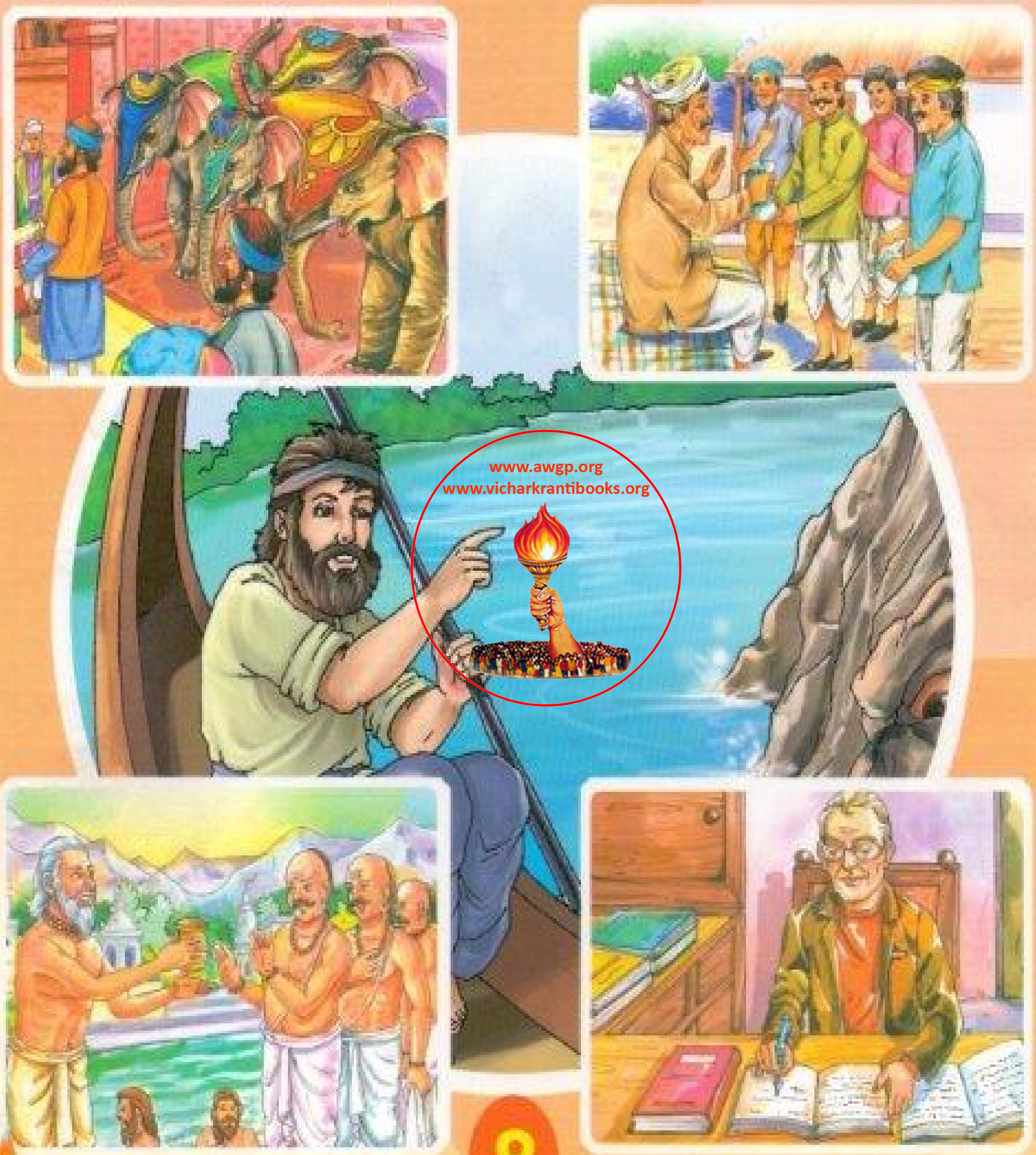

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

8

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY
SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

पेड़ का दरद

एक मोटा मजबूत पेड़ कटकर जमीन पर गिर पड़ा। उसे इस तरह जमीन पर पड़ा देखकर एक राहगीर ने पूछा—"भाई पेड़! तुम तो बहुत मजबूत थे। कल तक बड़ी शान से खड़े थे, आज क्या हुआ जो इस तरह नीचे गिर जाना पड़ा?"

पेड़ ने दरद भरे स्वर में कहा—"मेरे वंश का एक लकड़ी का टुकड़ा कुल्हाड़ी का बेंट बन गया और उसके कारण मेरी जड़ कट गई। यदि वह लकड़ी का बेंट विरोधी से न मिल गया होता तो कुल्हाड़ी लोहे की होते हुए भी मेरा कुछ न बिगाड़ सकती।"

दूसरों के द्वारा किया गया बुरा व्यवहार तो व्यक्ति सह लेता है, परंतु जिन्हें वह अपना आत्मीय समझता है, उनसे दी गई पीड़ा असहनीय होती है, वह उसे अंदर से तोड़ देती है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अर्जुन-बाँसुरी संवाद

अर्जुन ने एक बार बाँसुरी से पूछा—"सुभगे! तुम्हें कृष्ण स्वयं हर समय ओठों से लगाए रहते हैं। देखो हम सब उनकी कृपा पाने के लिए बहुत प्रयत्न करते हैं परंतु सफल नहीं होते जबकि तुम बिना प्रयत्न किए ही उनके ओठों पर रहती हो।"

"बिना प्रयत्न किए नहीं अर्जुन" मुरली बोली—"मैंने भी प्रयत्न किया है। जानते हो मुझे मुरली बनने के लिए अपना असली रूप ही खो देना पड़ा है।"

अर्जुन को बात तब समझ में आई। बाँसुरी अपने आप में खाली थी। उसमें स्वयं का कोई स्वर नहीं गूँजता था। बजाने वाले के ही स्वर बोलते थे। बाँसुरी को देखकर कोई यह नहीं कह सकता था कि यह कभी बाँस रह चुकी है। क्योंकि न तो उसमें कोई गाँठ थी और न कोई अवरोध। अर्जुन को भगवान का प्यार पाने का अनूठा सूत्र मिल गया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चनों की लोभिन को पुत्र कैसे मिले ?

संत चिदंबर उन दिनों सिद्धपुरुष माने जाते थे। कितने ही लोग उनके पास सहायता हेतु वरदान माँगने जाते। एक दिन एक स्त्री संतान प्राप्त होने का आशीर्वाद माँगने आई। संत ने उसे भुने चने दे दिए और संतोषपूर्वक बैठकर पेट भर लेने को कहा। स्त्री चने खाती रही। कई छोटे बच्चे उधर खेल रहे थे, वे चने पाने के लिए स्त्री को देखते रहे, पर उसने आँखें फेर लीं, किसी को दिए नहीं। विदाई का प्रणाम करने वह स्त्री पहुँची तो संत ने कहा—"देवी! जब तू बच्चों को तनिक से चने तक देने की उदारता न दिखा सकी तो भगवान तुझे बेशकीमती बच्चा मुफ्त में कैसे देगा?"

भगवान भी उदार व्यक्तियों को ही आशीर्वाद देते हैं।

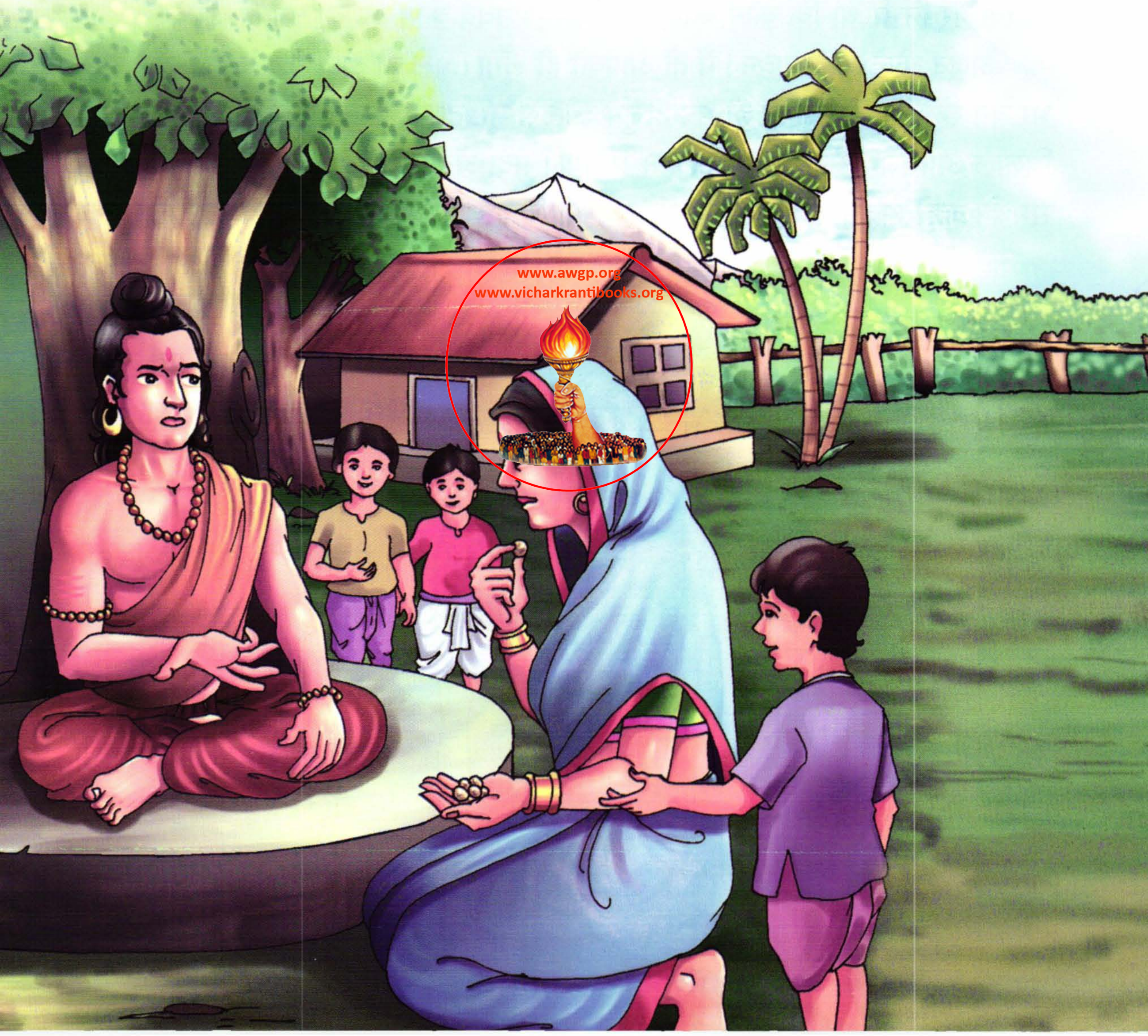

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कृष्ण के वरण की छूट

भगवान श्रीकृष्ण के पास दुर्योधन व अर्जुन दोनों पहुँचे। महाभारत युद्ध के पूर्व कौरव व पांडव दोनों ही कृष्ण को अपने पक्ष में करना चाहते थे। दुर्योधन पहले पहुँचे व अहंकारवश सो रहे श्रीकृष्ण के सिरहाने बैठ गए। बाद में अर्जुन आए व अपनी सहज श्रद्धा-भावनावश पैरों के पास बैठ गए। श्रीकृष्ण जागे। अर्जुन पर उनकी दृष्टि पड़ी। कुशल-क्षेम पूछकर अभिप्राय पूछने ही जा रहे थे कि दुर्योधन बोल उठा—"पहले मैं आया हूँ, मेरी बात सुनी जाए।" श्रीकृष्ण असमंजस में पड़े। बोले—"अर्जुन छोटे हैं इसलिए प्राथमिकता तो उन्हीं को मिलेगी, पर माँग तुम्हारी भी पूरी करूँगा। एक तरफ मैं हूँ, दूसरी तरफ मेरी विशाल चतुरंगिणी सेना। बोलो अर्जुन, तुम दोनों में से क्या लोगे?" चयन की स्वतंत्रता थी, यह विवेक पर निर्भर था कि कौन क्या माँगता है—भगवत कृपा अथवा उनका वैभव!

अर्जुन बोले—"भगवन! मैं तो आपको ही लूँगा। भले ही आप युद्ध न करें, बस साथ भर बने रहें।" दुर्योधन मन ही मन अर्जुन की इस मूर्खता पर प्रसन्न हुआ और श्रीकृष्ण की विशाल अपराजेय सेना पाकर फूला न समाया। सदा अनीति करने वाला दुर्योधन, ईश्वरीय समर्थन वाले अर्जुन, जिसके पास श्रीकृष्ण भी बिना शस्त्र के थे, से हारा ही नहीं महाभारत के युद्ध में बंधु-बांधवों सहित मारा भी गया। दुर्योधन जैसे अनीति का चयन करने वाले एवं अर्जुन जैसे ईश्वरीय कृपा को वरण करने वाले तत्त्व हर मनुष्य के भीतर विद्यमान हैं। एक को विवेक या सुबुद्धि एवं दूसरे को अविवेक या दुर्बुद्धि कह सकते हैं।

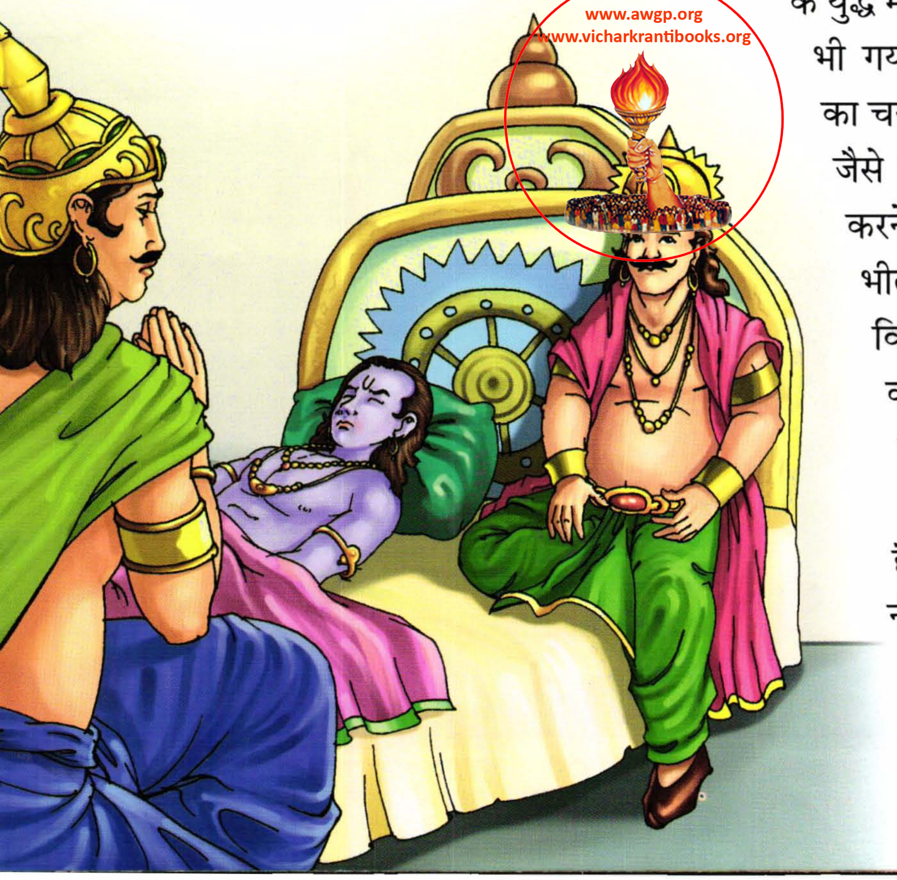

व्यक्ति को स्वतंत्रता है कि वह अनीति चुने या नीति!

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सफाई का महत्त्व

गांधी जी नोआखाली में शांति स्थापना के लिए भ्रमण कर रहे थे। पीड़ितों को सांत्वना भी देते। साथ ही छोटी पगडंडियों के इर्द-गिर्द हुए मल-मूत्र को भी पत्तों से समेटकर जमीन में गाड़ते चलते। वे कहते—"सफाई मानवी गुणों में सबसे प्रमुख है। उसके लिए कोई विशेष समय या कार्यक्रम निर्धारित नहीं किया जा सकता। वह किसी भी कार्य के साथ चलते-चलते भी होती रह सकती है। केवल उसकी महत्ता समझी जानी चाहिए।"

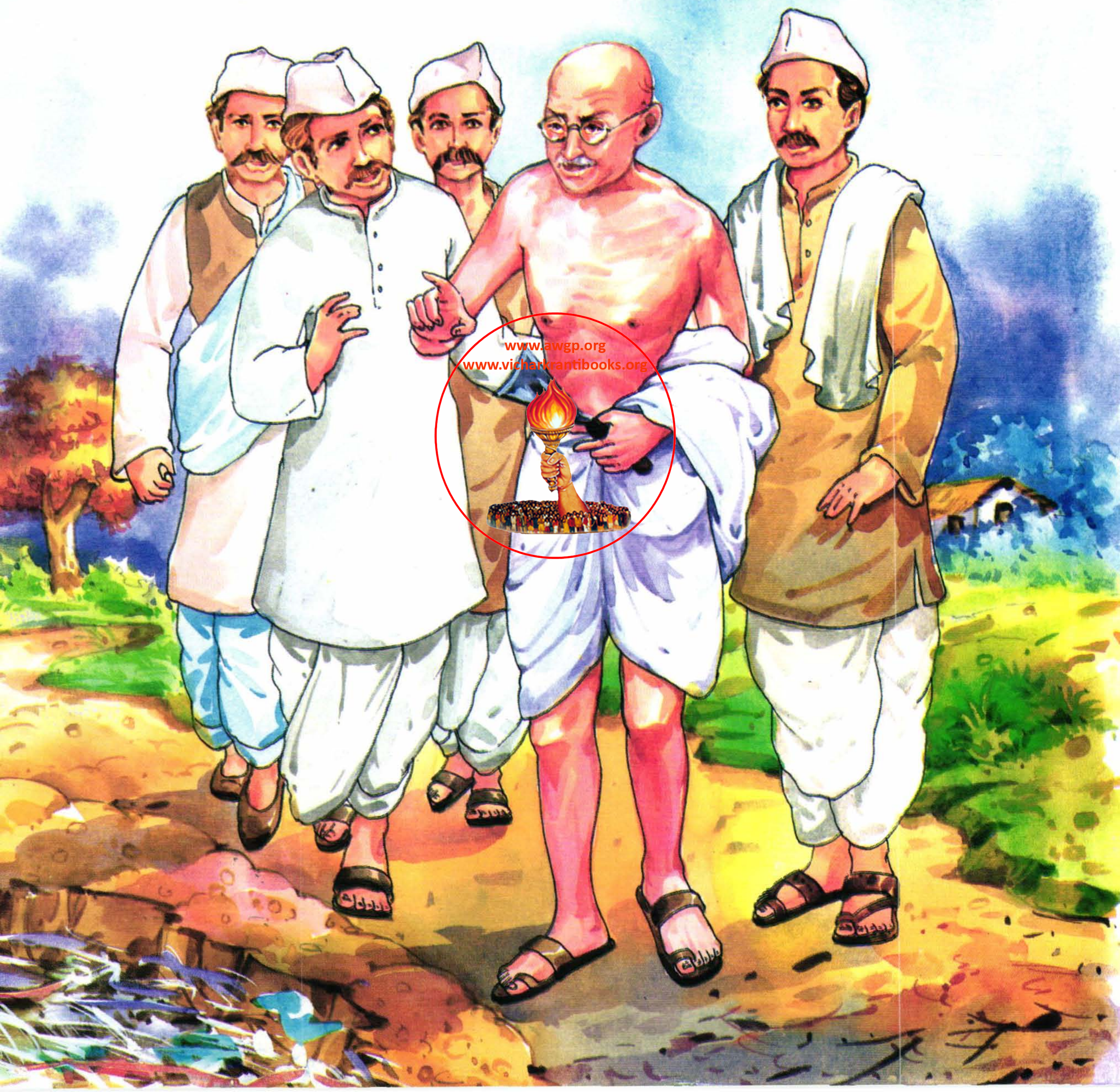

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

नीयत बिगड़ी काम बिगड़ा

एक राजा जंगल में भटक गया। प्यास से आकुल-व्याकुल होकर वह इधर-उधर घूमने लगा। उसे एक झोंपड़ी दिखाई दी। वह वहाँ पहुँचा। वहाँ एक बूढ़ा आदमी बैठा था। पास ही ईख का खेत था। राजा ने पानी माँगा। बूढ़े ने दो-चार ईख तोड़े, कोल्हू में उन्हें पेरा। ईख के रस से एक कटोरा भर गया। राजा ने वह पिया और उसका मन पुलकित हो गया। उसने बूढ़े से पूछा—"क्या ईख पर 'कर' (टेक्स) भी लगता है?" बूढ़े ने कहा—"नहीं, हमारा राजा दयालु है। वह भला हमसे क्या 'कर' लेगा?" राजा ने मन ही मन सोचा—"ऐसी मीठी चीज पर अवश्य कर (टेक्स) लगना चाहिए।" मन में संकल्प-विकल्प उठने लगे। आखिर 'कर' लगाने का निश्चय कर लिया। राजा ने चलते-चलते बूढ़े से कहा—"एक प्याला रस और पिलाओ।" बूढ़े ने फिर दो-चार ईख तोड़े। उन्हें कोल्हू में पेरा पर रस से कटोरा नहीं भरा। राजा अचंभे में पड़ गया। उसने पूछा—"यह क्या? पहले ईख के रस से कटोरा भर गया था, अब नहीं भरा, यह क्यों?" बूढ़ा दूरदर्शी था। उसने कहा—"लगता है मेरे राजा की नीयत बिगड़ गई। अन्यथा ऐसा नहीं होता।" राजा मन ही मन पछताने लगा। राजा की नीयत का इतना असर होता है तो क्या धर्माध्यक्षों, गणमान्य व्यक्तियों के आचरण का प्रभाव समाज पर नहीं पड़ता होगा?

व्यक्ति की नीयत खराब होती है या आचरण खराब होता है तो उसका प्रभाव समाज पर भी पड़ता है।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नरेन्द्र को सीख

विवेकानंद विदेश जा रहे थे। वे माता शारदामणि के पास आशीर्वाद लेने पहुँचे।

माताजी ने कहा—"पहले मेरा काम कर, बाद में आशीर्वाद दूँगी।" सामने खुली तलवार पड़ी थी इशारा करते हुए कहा—"उसे उठाकर ला।"

विवेकानंद ने माता के हाथ में मूँठ थमा दी और धार वाली नोंक उसने अपने हाथ में रखी।

माता ने आशीर्वाद देते हुए कहा—"जो दूसरों की कठिनाई को समझता है और मुसीबत अपने हिस्से में लेता है, उसी पर भगवान का आशीर्वाद बरसता है। तुम्हें भगवान का वरदान और कृपा सदा मिलती रहेगी।"

विवेकानंद जी कहते थे—"महानता के ढेरों गुण मुझे परमहंस जी के पारिवारिक वातावरण में सीखने-विकसित करने का लाभ मिला। अन्यथा वे मुझे कभी नहीं मिल सकते थे।"

परिवार का श्रेष्ठ वातावरण संस्कारों के विकास में बहुत अधिक सहायक बनता है।

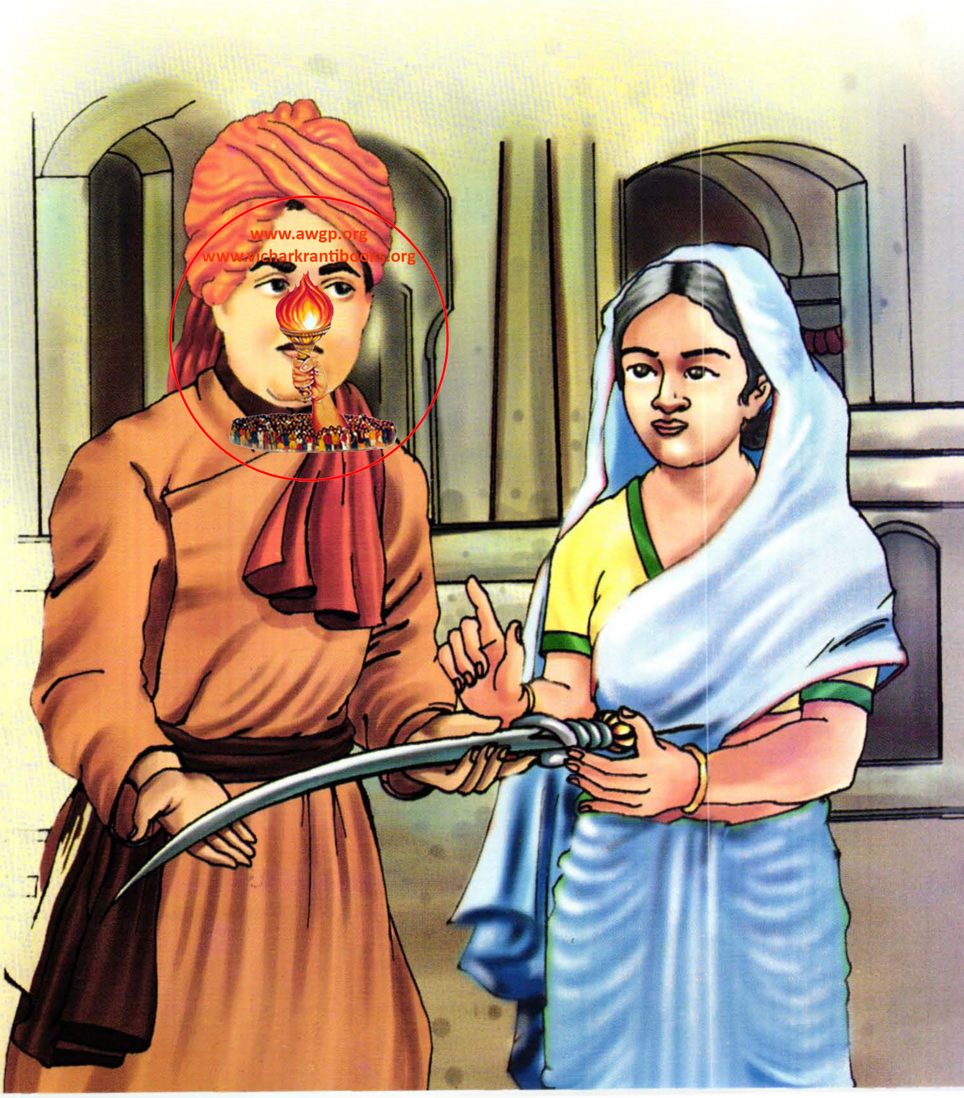

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

द्रौपदी की लाज बची

द्रौपदी जमुना में स्नान कर रहीं थीं। दृष्टि दौड़ाई तो देखा कि कुछ दूर पर एक साधु स्नान कर रहा है। हवा से उसकी किनारे पर रखी लँगोटी पानी में बह गई और जिसे वह पहने था, पुरानी होने के कारण संयोगवश वह भी उसी समय फट गई। बेचारा असमंजस में था। नंगी-उघारी स्थिति में लोगों के बीच से कैसे गुजरे ? उसने दिनभर झाड़ी में छिपकर समय काटने और अँधेरा होने पर कुटी में लौटने का निश्चय किया। सो छिप गया। द्रौपदी को स्थिति समझने में देर न लगी। वे झाड़ी तक पहुँचीं। अपनी साड़ी का एक तिहाई भाग फाड़कर साधु को दे दिया। कहा—"इसमें से दो लँगोटियाँ बना लीजिए। दो तिहाई से मेरी भी लाज ढँक जाएगी। एक तिहाई से आप भी लाज बचा लें। मनुष्य की लाज एक है।" साधु ने कृतज्ञतापूर्वक वह अनुदान स्वीकार किया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

जब एक बार दुर्योधन की सभा में द्रौपदी की लाज उतारी जा रही थी। उसने भगवान को पुकारा। भगवान सोचने लगे—इसका कुछ पुण्य जमा हो, तो बदले में अधिक दे सकना संभव है। देखा तो साधु की लँगोटी वाला कपड़ा ब्याज समेत अनेक गुना हो गया। भगवान ने उसी को द्रौपदी तक साड़ी के रूप में पहुँचाया और उसकी लाज बचाई।

देवता शब्द बना ही दान से है अर्थात जो सदैव देता रहता है, वही देवता है। मनुष्य के पास परमात्मा ने शक्ति का अक्षय कोष भर दिया, ताकि परंपरा बंद न हो।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खलीफा उमर की संवेदना

खलीफा उमर अपने गुलाम के साथ एक देहात में जा रहे थे कि एक बुढ़िया को जोर-जोर से रोते देखा। खलीफा ने बुढ़िया से रोने का कारण पूछा। उसने बताया—"मेरा जवान बेटा लड़ाई में मारा गया। मैं भूखी मरती हूँ। पर खलीफा को मेरा दुःख-दरद तक मालूम नहीं।"

खलीफा गुलाम को लेकर वापस लौट गए और एक बोरी गेहूँ पीठ पर लादकर बुढ़िया के यहाँ चलने लगे। रास्ते में गुलाम ने कहा—"आप बोझ मत उठाइए। बोरी मैं ले चलूँगा।" खलीफा ने कहा—"मेरे पापों का बोझ तो खुदा के घर मुझे ही ले चलना पड़ेगा। वहाँ तू थोड़े ही मेरे साथ जाएगा।" बोरी बुढ़िया के घर पहुँचाने पर बुढ़िया ने उसका नाम पूछा तो बताया—"मेरा ही नाम खलीफा उमर है।" बुढ़िया ने कहा—"अपनी प्रजा के दुःख-दरदों को अपने निजी परिवार के दुःख-दरद मानकर चलने की यह भावना तुझे खलीफाओं का आदर्श बना देगी। लाखों दुआएँ तेरे लिए उठेंगी, तू अमर हो जाएगा।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

कठिनाई में रहने का फल

"चाचा नेहरू! आपका सबसे अधिक वजन कब और कितना था?" फूल सी कोमल बालिका ने प्रधानमंत्री नेहरू के सम्मुख प्रश्न रखा। नेहरू उस अजीब प्रश्न को सुनकर आश्चर्य में पड़ गए। वह अपनी स्मृतियों पर जोर देते हुए प्रेमिल वाणी में बोले—"प्यारी मुन्नी! जब मैं अहमदनगर जेल में था, उस समय मेरा वजन १६२ पौंड था।" चाचा ने अपनी फूल सी वाणी बिखेरते हुए कहा—"जेल के जीवन की कठोरताओं ने ही मेरे वजन को बढ़ाया और स्वस्थ रखा। मैं अपने को अन्य व्यक्तियों की अपेक्षा सौभाग्यशाली मानता था कि अपने देश को स्वतंत्रता दिलाने के लिए जेल में कठिनाइयाँ सहन कर रहा हूँ और इस प्रसन्नता तथा निश्चिंतता के जीवन ने ही मेरे वजन को बढ़ाया है।"

कठिनाइयों में भी व्यक्ति को कुछ न कुछ लाभ अवश्य प्राप्त होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

प्रतिभा का निखार संयुक्त रहने में

ऋषि अंगिरा के शिष्य उदयन बड़े प्रतिभाशाली थे, पर अपनी प्रतिभा के स्वतंत्र प्रदर्शन की उमंग उनमें रहती थी। साथी-सहयोगियों से अलग अपना प्रभाव दिखाने का प्रयास यदा-कदा किया करते थे। ऋषि ने सोचा यह वृत्ति इसे ले डूबेगी। समय रहते समझाना होगा। सरदी का दिन था। बीच में रखी अँगीठी में कोयले दहक रहे थे। सत्संग चल रहा था। ऋषि बोले—"कैसी सुंदर अँगीठी दहक रही है। इसका श्रेय इसमें दहक रहे कोयलों को है न?" सभी ने स्वीकार किया। ऋषि पुनः बोले—"देखो, अमुक कोयला सबसे बड़ा, सबसे तेजस्वी है। इसे निकालकर मेरे पास रख दो। ऐसे तेजस्वी का लाभ अधिक निकट से लूँगा।"

चिमटे से पकड़कर वह बड़ा तेजस्वी अंगार ऋषि के समीप रख दिया। पर यह क्या अंगार मुरझा सा गया। उस पर राख की पर्त आ गई और वह तेजस्वी अंगार काला कोयला भर रह गया। ऋषि बोले—"बच्चो! देखो, तुम चाहे जितने तेजस्वी हो, पर इस कोयले जैसी भूल मत कर बैठना। अँगीठी में सबके साथ रहता तो अंत तक तेजस्वी रहता और सबके बाद तक गरमी देता। पर अब न इसका श्रेय रहा और न इसकी प्रतिभा का लाभ हम उठा सके।"

शिष्यों को समझाया — "परिवार और समाज वह अँगीठी है, जिसमें प्रतिभाएँ संयुक्त रूप से तपती हैं। व्यक्तिगत प्रतिभा का अहंकार न टिकता है, न फलित होता है। अकेले चलने का अहंकार प्रखर प्रतिभा को भी धूमिल बना देता है। साथ-साथ मिल-जुलकर काम करने से ही व्यक्ति और समाज का कल्याण होता है।"

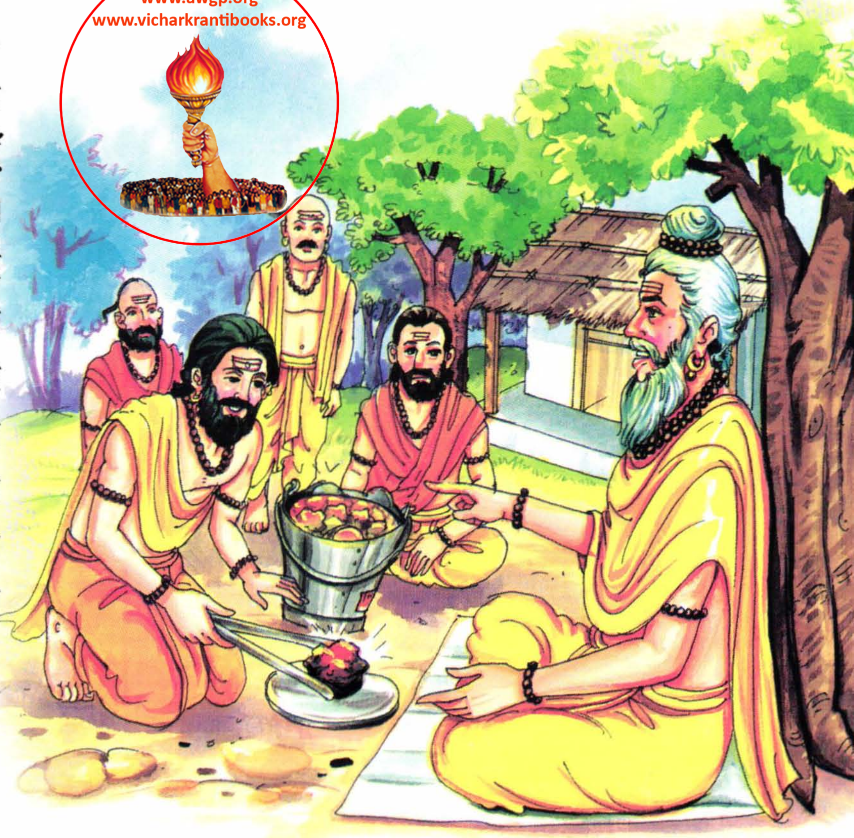

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दीपक और सूरज

टिमटिमाते दीपक को देखकर सूरज बोला—"नन्हे बच्चे, अंधकार की शक्ति तूने देखी नहीं। अजगर है वह। निगल जाएगा तुझे, चुपचाप बैठ, जीवन नष्ट मत कर।"

दीपक बोला—"तात्! निरंतर चलते रहने का व्रत आपने नहीं तोड़ा तो मैं ही उसे क्यों छोड़ूँ, मैं भी जब तक जीवन है (तेल है) जलता रहूँगा।"

कोई कितना ही छोटा क्यों न हो, मन के दृढ़ विश्वास और मेहनत से वह बड़े से बड़ा काम भी कर लेता है।

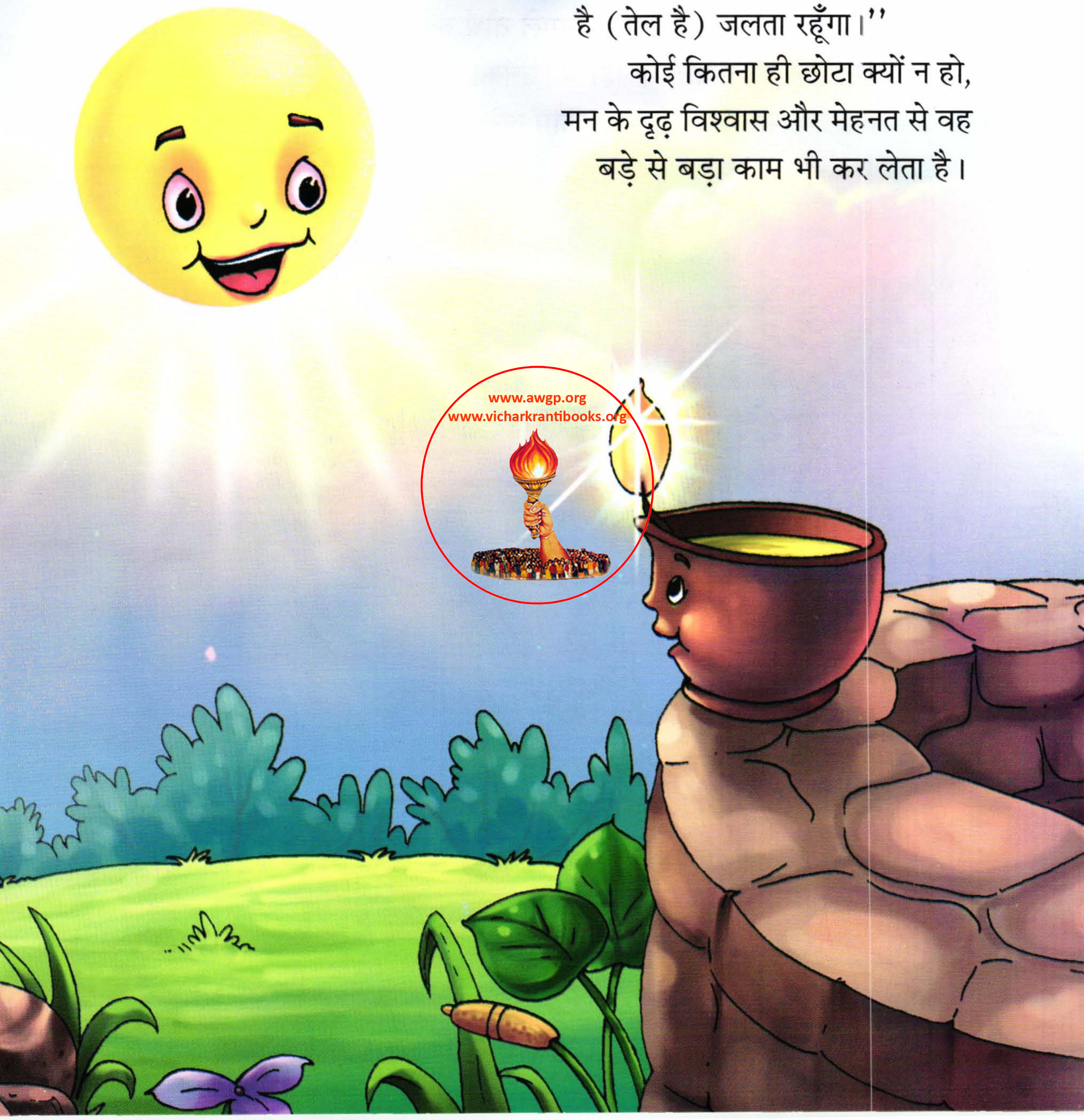

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

बापा जलाराम

वीरपुर (गुजरात) में एक किसान थे। उनका नाम था जलाराम। वे कृषि कार्य करते थे। जो अनाज पैदा होता उसे दीन-दुखियों तथा संत-महात्माओं के लिए खरच करते रहते। वे खेत पर रहते, उनकी पत्नी भोजन बनाती रहतीं। घर पर हर समय भोजन करने वालों की लाइन लगी रहती। बाल-बच्चों का झंझट उनके सिर पर था नहीं।

उनकी दयालुता और श्रद्धा की परीक्षा लेने एक दिन भगवान साधु-वेश में उनके घर आए। उन्होंने कहा—"उनका बिस्तर अगले तीर्थ तक पहुँचना है। कोई प्रबंध करो।" जलाराम मजदूर देने की स्थिति में नहीं थे। उनकी पत्नी उस बिस्तर को सिर पर रखकर चल दीं। जलाराम आधे दिन खेत का काम करते, आधे दिन भोजन पकाते-खिलाते।

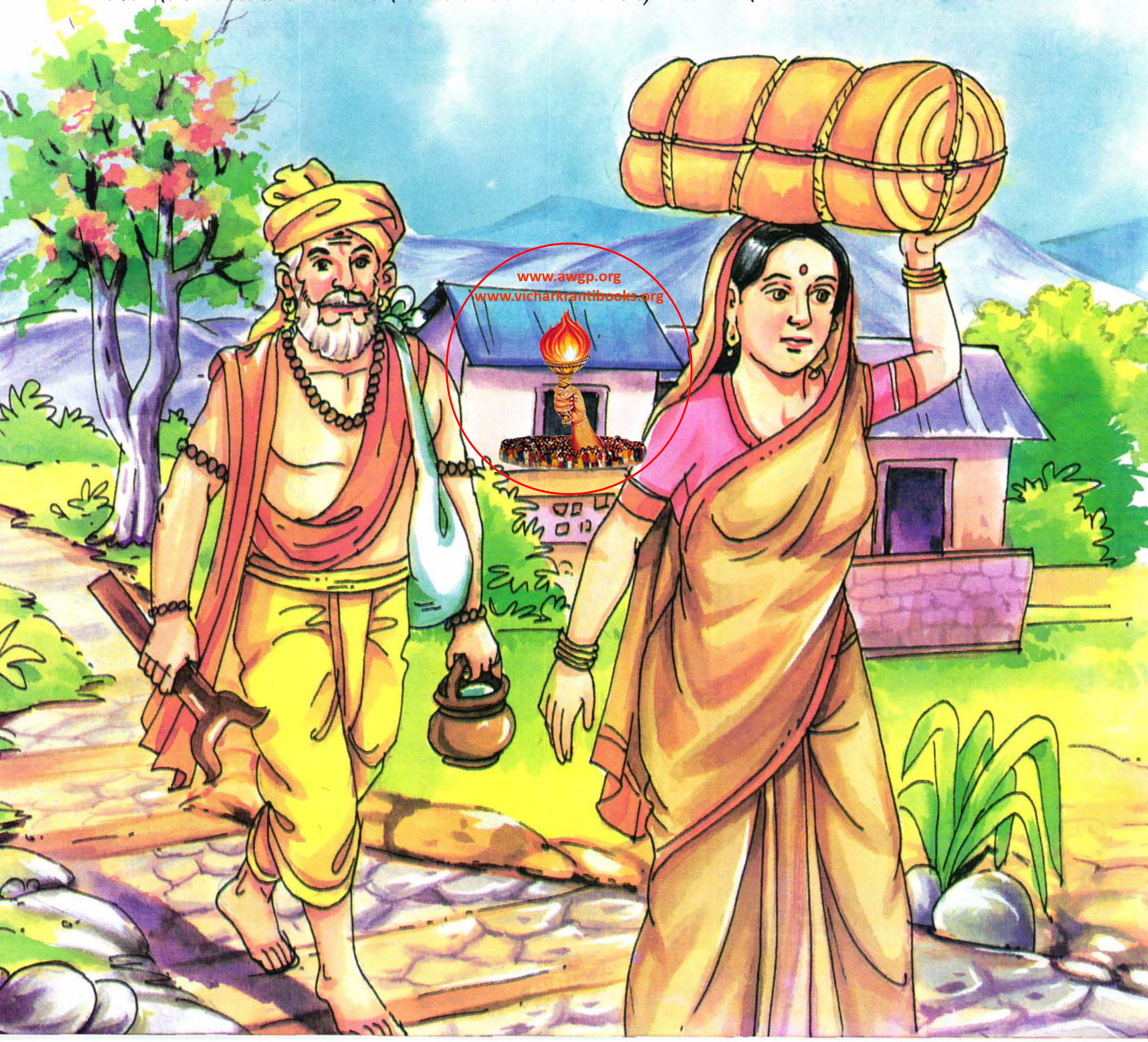

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

संत के रूप में आए भगवान की परीक्षा पूरी हो गई। वे कुछ ही दूर आगे चलकर गायब हो गए। उस महिला को अन्नपूर्णा झोली दे गए। घर लौटकर उसने उस झोली को एक कोठरी में टाँग दिया। उस कोठरी में से अन्न कभी कम नहीं पड़ा। अभी भी हजारों लोग उस अन्नपूर्णा झोली का प्रसाद लेने आते हैं। भंडार चुकता नहीं। बापा जलाराम की झोली आज भी सबको भोजन के लिए खुली है।

जो दूसरों की सेवा-सहायता करता है, परोपकार करता है, ईश्वर भी उस पर दैवी अनुदान बरसाते हैं।

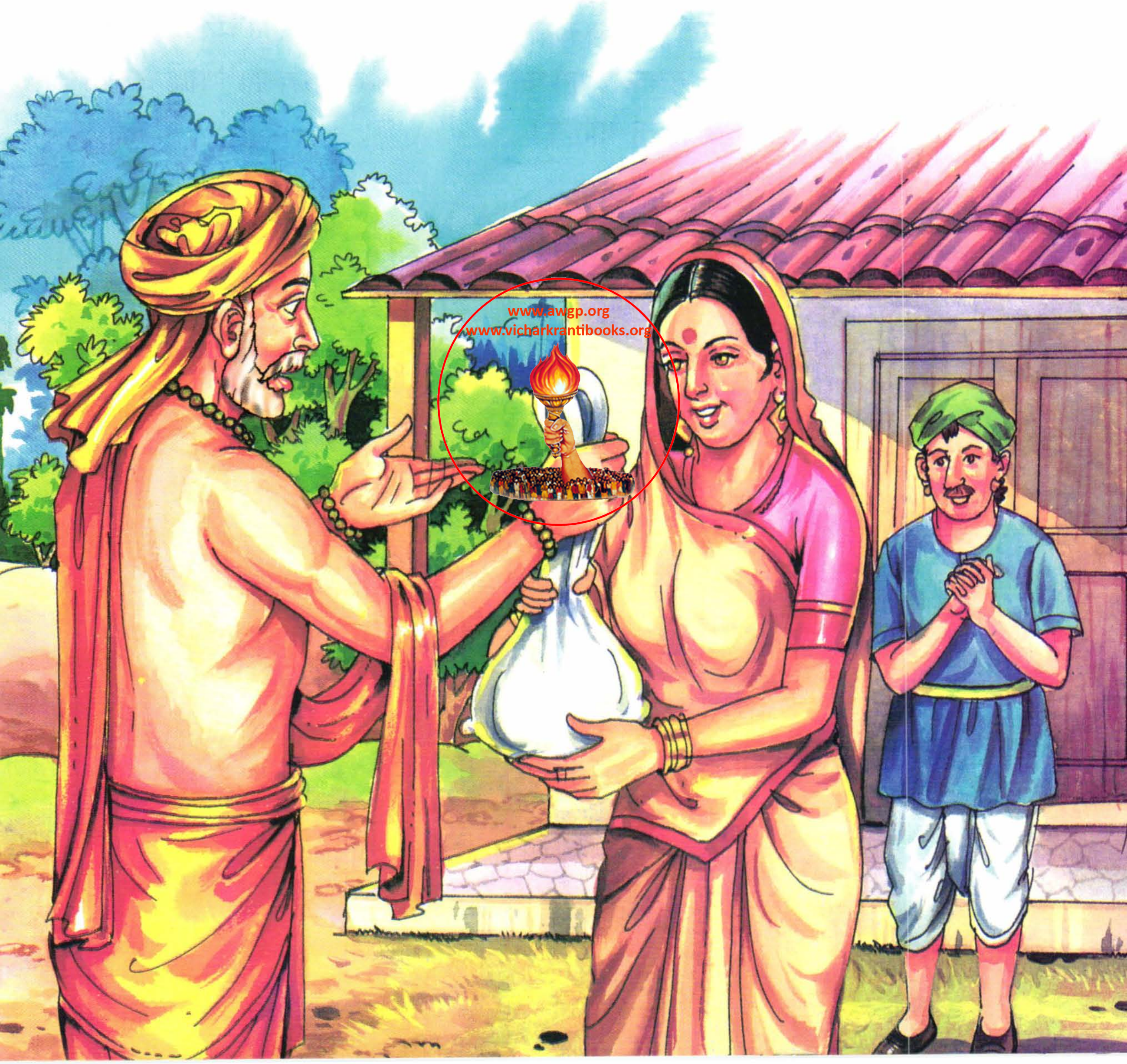

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

विद्यासागर की माँ

ईश्वरचंद्र विद्यासागर तब एक किशोर ही थे। उदारतापूर्वक जो अपने पास था उसे दूसरों को बाँटते रहने की भावना का बचपन से ही उनके हृदय में स्थान था। यह बाँटने तथा दूसरों को देने की आदत उन्होंने अपनी माँ से बचपन में सीखी थी। एक दिन एक साथी को वे लेकर घर आए। माँ से कहा—"यह फीस के पैसे न होने के कारण परीक्षा नहीं दे पा रहा है। क्या हम इसकी कुछ मदद कर सकते हैं?" माँ ने तुरंत अपना मंगलसूत्र निकालकर दे दिया। उसे गिरवी रखकर फीस दे दी गई । छात्र परीक्षा में बैठा, पास हो गया। गिरवी रखा मंगलसूत्र लाकर उसने ईश्वरचंद्र की माँ के चरणों में रखा। ममता भरी डाँट लगाते हुए वे बोलीं—"बेटा! इसका नाम ही मंगलसूत्र है। इसीलिए मंगल कार्य के लिए काम आ गया। तू इसे रख, बेचकर आगे की पढ़ाई की व्यवस्था बना।" सदा जरूरत के समय दूसरों की मदद करते रहना चाहिए।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

धैर्य और स्थिरता

एक बार एक व्यक्ति चलते-चलते थक गया था। वह थका हुआ व्यक्ति पहाड़ी के नीचे चुपचाप खड़ा था। भेड़ चराने वाले लड़के अनुमान लगाने लगे कि वह किस कारण से खड़ा है?

एक बोला—"उसका पालतू जानवर खो गया है, सो खोजने को नजर दौड़ा रहा है।"

दूसरा बोला—"साथी पीछे छूट गया है, सो इंतजार में है।"

तीसरे ने कहा—"इधर से ले चलने योग्य कोई सौगात ले जाने के चक्कर में है।" असली वजह जानने के लिए तीनों उस खड़े व्यक्ति के पास पहुँचे।

उसने सोचते हुए उत्तर दिया—"जब चलने की शक्ति न रहे और बैठने योग्य स्थान न दीखे तो डगमगाने-गड़बड़ाने से अच्छा है कि किसी जगह शांत चित्त से उपाय सूझने तक चुपचाप खड़ा रहे।" किसी भी कठिनाई का हल धैर्य और स्थिर बुद्धि से निकाला जा सकता है। इससे आगे का मार्ग अपने आप दिखाई देने लगता है।

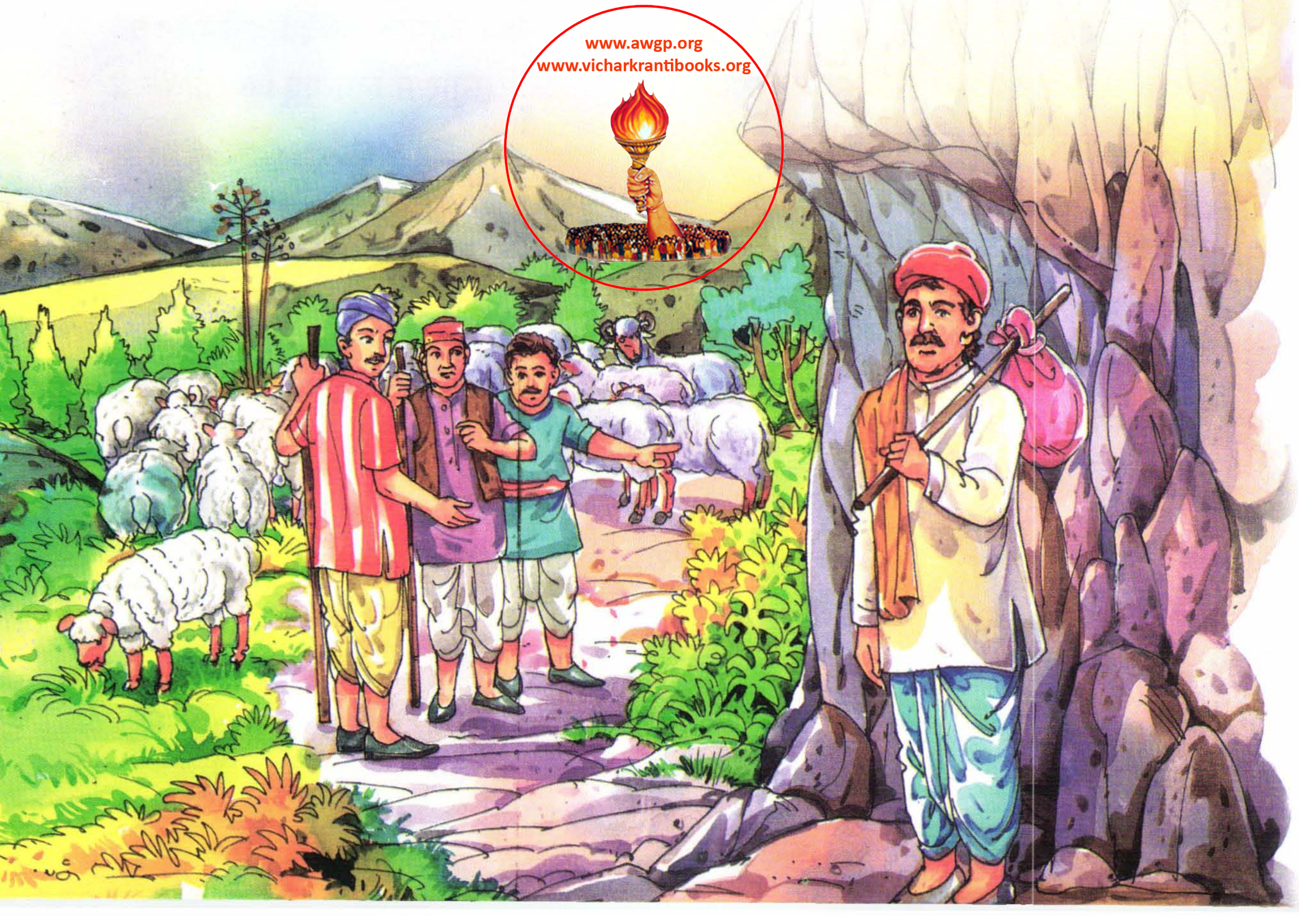

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पराक्रमी चाणक्य

गुप्तकाल में मगध में जन्मे चाणक्य बड़े मातृभक्त और पढ़ाई-लिखाई में लगे रहते थे। एक दिन उनकी माता रो रही थी। माता से कारण पूछा तो उसने कहा—"तेरे अगले दाँत राजा होने के लक्षण हैं। तू बड़ा होने पर राजा बनेगा तो तू मुझे भूल जाएगा।" चाणक्य हँसते हुए बाहर गए और दोनों दाँत तोड़कर ले आए और बोले—"अब देखो ये लक्षण मिट गए न अब मैं तेरी सेवा में ही रहूँगा। तू आज्ञा देगी तो आगे चलकर राष्ट्र देवता की साधना करूँगा।" बड़े होने पर चाणक्य पैदल चलकर तक्षशिला गए और वहाँ २४ वर्ष पढ़े। अध्यापकों की सेवा करने में वे इतना रस लेते थे कि उनके प्रिय शिष्य बन गए। सभी ने उन्हें मन से पढ़ाया और अनेक विषयों में बहुत योग्य बना दिया।

लौटकर मगध आए तो उन्होंने एक पाठशाला चलाई और अनेक विद्यार्थी अपने सहयोगी बनाए। उन दिनों मगध का राजा नंद दमन और अत्याचारों पर अत्याचार किए जा रहा था। यूनानी भी देश पर बार-बार आक्रमण करते थे। चाणक्य ने एक प्रतिभावान युवक चंद्रगुप्त को आगे किया और उसे साथ लेकर दक्षिण तथा पंजाब का दौरा किया। सहायता के लिए सेना इकट्ठी की और सभी आक्रमणकारियों को सदा के लिए लौटा दिया। वापस लौटे तो नंद से भी गद्दी छीन ली। चाणक्य ने चंद्रगुप्त का चक्रवर्ती राजा की तरह अभिषेक किया और स्वयं धर्म प्रचार तथा विद्या विस्तार में लग गए। आजीवन वे अधर्म-अनीति से मोर्चा लेते रहे। महान विभूतियाँ यश-वैभव की कामना से दूर रहकर निरंतर समाज की सेवा में लगी रहती हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

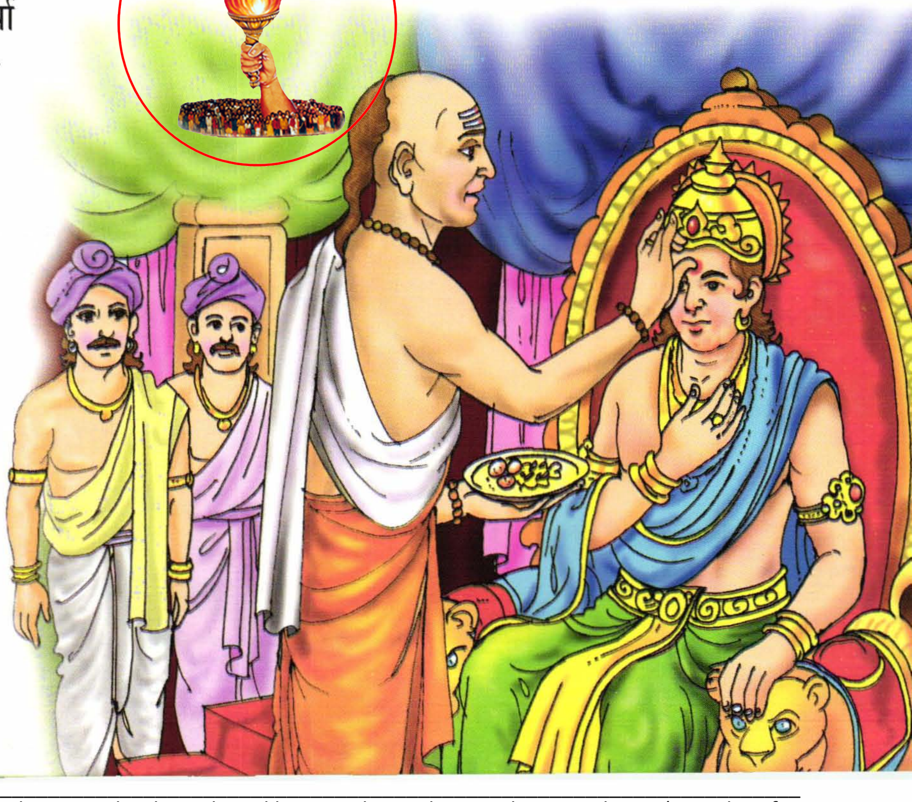

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सद्भावों के संस्कार

एक संत के पीछे एक आदमी गालियाँ बकता चला जा रहा था। संत बड़े शांत भाव से अपनी राह चले जा रहे थे। वह सारा इलाका जंगली था। यह इलाका समाप्त होकर जहाँ से बस्ती दीखने लगी, वहीं संत ठहर गए और उस व्यक्ति से बोले—"भाई, मैं यहाँ रुक गया हूँ। अब जितना जी चाहे मुझे गाली दे दो।"

"ऐसा क्यों?"—उस दुष्ट आदमी ने पूछा।

"ऐसा इसलिए भाई कि उस बस्ती के लोग थोड़ा मुझे मानते थे। उनके सामने तुम मुझे गाली देते, तो वे तुमको जरूर सजा देते बहुत मारते।"

"तो इससे तुझे क्या?"—उस दुष्ट ने फिर पूछा।

"तुम्हें तंग किया जाता तो मुझे बहुत तकलीफ होती। आखिर तुम इतनी दूर तक मेरे पीछे-पीछे आए हो तो मुझे भी तुमसे स्नेह हो गया है।" संत ने प्यार से समझाते हुए कहा। वह दुष्ट व्यक्ति संत के चरणों पर गिर पड़ा। जानते हो वह संत कौन था? ये थे शिवाजी के गुरुसमर्थ रामदास। हमारी सद्भावनाएँ अर्थात अच्छा सोचना व्यक्ति को गहराई से प्रभावित करती हैं। वे वातावरण पर भी सूक्ष्म प्रभाव डालती हैं और उसे भी बदलने की सामर्थ्य रखती हैं।

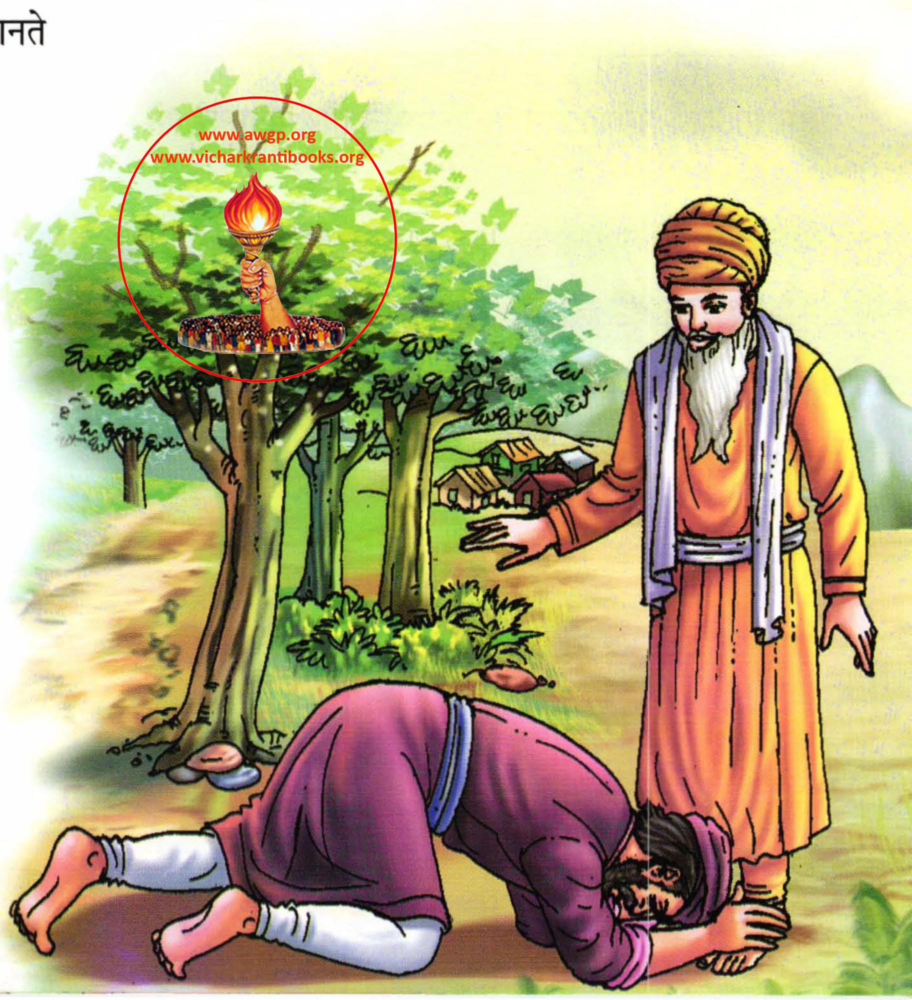
www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मूलधन की वृद्धि

एक बूढ़ा व्यक्ति तीर्थयात्रा करने घर से तीन वर्ष के लिए निकला। चारों बेटों को बुलाकर अपनी जमा पूँजी उनके हाथों में सौंप दी और कहा ''लौटने पर ले लूँगा। न लौटूँ तो सब तुम्हारी।'' चारों को सौ-सौ रुपये सौंप गए। एक ने उन्हें सुरक्षित रख लिया। दूसरे ने उसे ब्याज पर उठा दिया। तीसरे ने रुपयों को शौक-मौज में उड़ाया। चौथे ने उनसे व्यवसाय करना आरंभ कर दिया। तीन साल बाद बूढ़ा लौटा और धरोहर वापस माँगी। एक ने ज्यों की त्यों लौटा दी। दूसरे ने थोड़ी ब्याज भी मिलाकर वापस कर दी। तीसरे ने खरच कर देने की कथा सुनाई और मजबूरी बताई। चौथे ने व्यवसाय किया जितना धन मिला था उसका चौगुना करके लौटाया। बाप ने चौथे की सबसे अधिक प्रशंसा की और उसे अपना उत्तराधिकारी बनाया। इसके बाद उसकी बुद्धिमानी सराही गई जिसने कम से कम ब्याज तो कमाया।

वृद्ध ने सबको समझाते हुए कहा—''रुपये को ब्याज पर चलाने या व्यवसाय में लगाने से वह बढ़ सकता है, यह सबको पता है। परंतु उसके लिए प्रयास-पुरुषार्थ वही कर सकता है जो अपने स्वार्थ से ऊपर उठकर पारिवारिक उत्तरदायित्वों का पालन करना सीखता है। तुम्हारी यही परीक्षा लेने के लिए मैंने तीर्थयात्रा की थी।''

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सतत स्वाध्यायशील – राल्ड शुज

राल्ड शुज को हर समय पढ़ते ही पढ़ते रहने में आनंद आता था। इतना पढ़ते थे कि उन्होंने नौकरी करते और गृहस्थ का पालन करते हुए भी २०० भाषाओं का अच्छा अभ्यास कर लिया। विभिन्न भाषाओं में उन्होंने कितनी ही पुस्तकों का अनुवाद किया। उन्हें हर समय अध्ययन में ही लगा देखा जाता था।

नौकरी से रिटायर होने पर उन्होंने कहा—"अच्छा हुआ अब मुझे पूरा समय पढ़ने को मिलेगा।" जीवन की अंतिम घड़ी तक उन्होंने अधिक से अधिक भाषाएँ पढ़ने का अपना विद्या-व्यसन जारी रखने का संकल्प लिया। इस प्रकार की लगन और सफलता के वे सारे संसार में अकेले ही व्यक्ति माने जाते।

समय सभी को समान रूप से मिलता है। जो हर क्षण का सदुपयोग कर लेता है, वही महान बन जाता है।

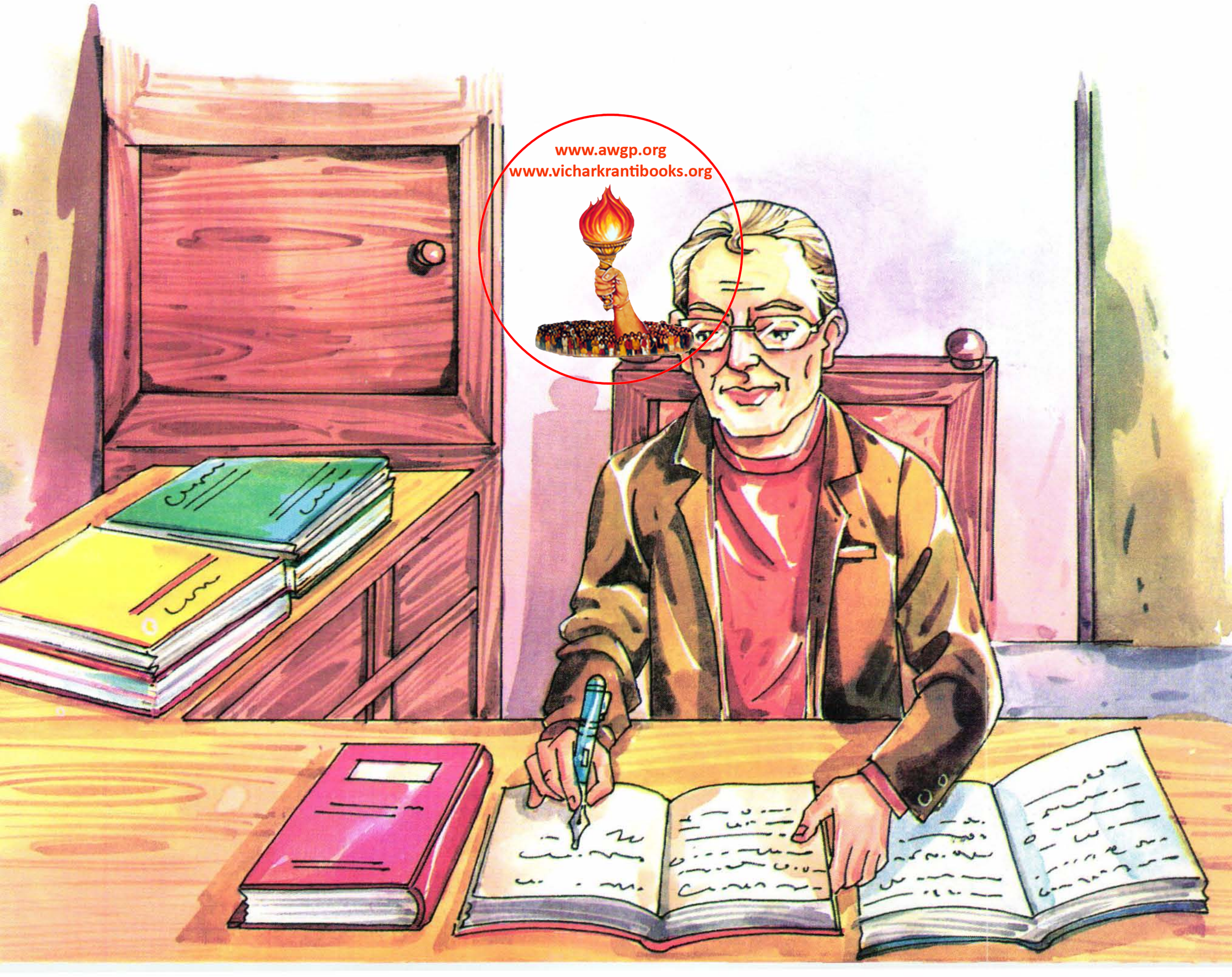

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

लक्ष्य के प्रति तन्मयता

द्रोणाचार्य ने प्रश्न किया—"दुर्योधन! सामने क्या दिखाई दे रहा है?" आकाश, वृक्ष, पत्तियाँ और चिड़िया जिस पर निशाना लगाना है। द्रोणाचार्य ने कहा—"तुम्हारा निशाना सही न लगेगा, बैठ जाओ।" एक-एक करके सारे शिष्य असफल होते चले गए। अब अर्जुन का नंबर आया। आचार्य ने वही प्रश्न दोहराया। "गुरुदेव! मुझे पक्षी की आँख के अतिरिक्त और कुछ नहीं दिखाई देता।" अर्जुन ने उत्तर दिया। बाण चलाओ, प्राचार्य ने आदेश दिया। तीर सही ठिकाने पर जा लगा। द्रोणाचार्य ने शिष्यों को बताया—"जिसे लक्ष्य के अतिरिक्त कुछ दिखाई न दे उसी की साधना सफल होती है।"

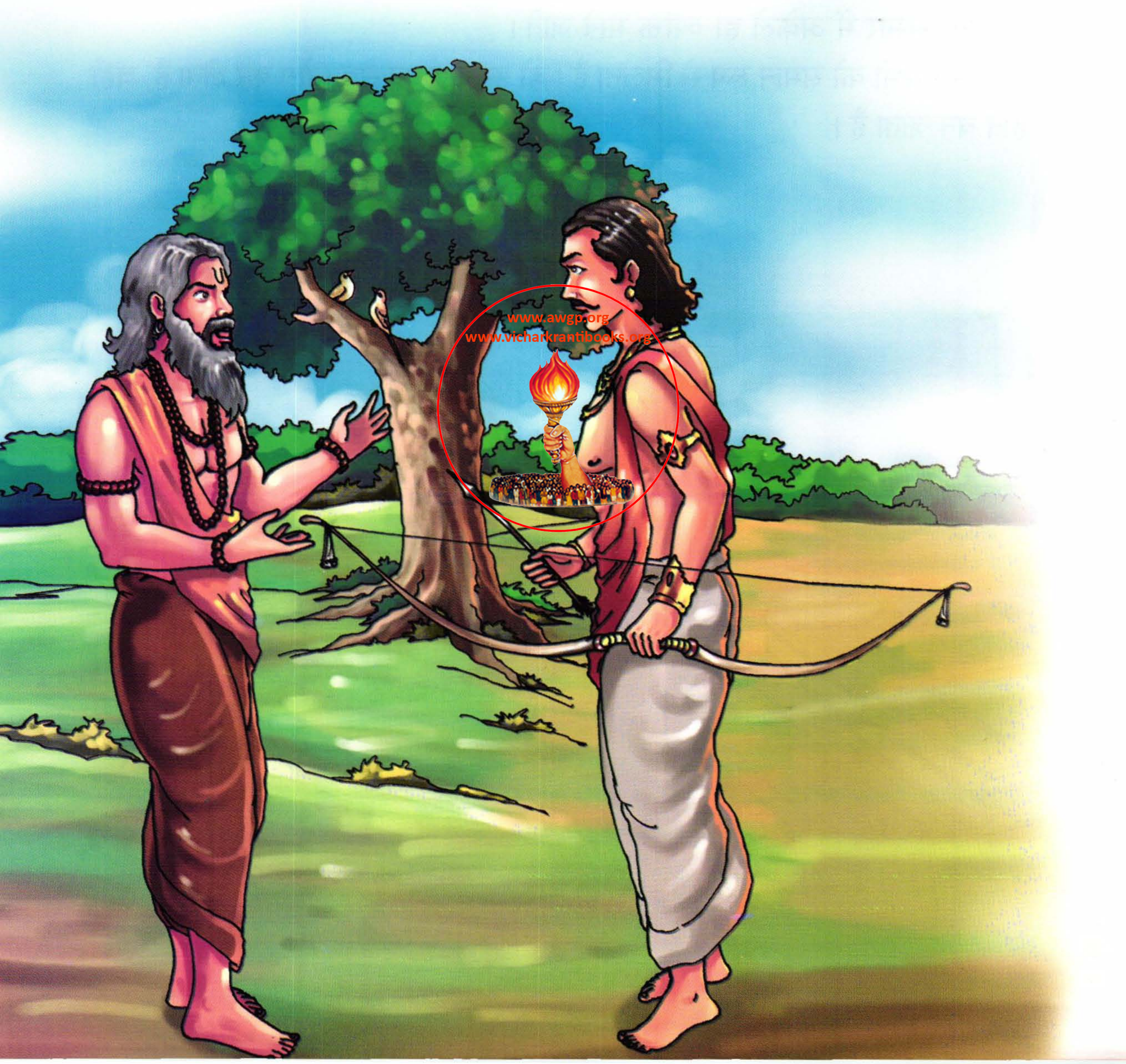

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सुलतान जैनुल आब्दीन

धर्म सहिष्णु सुलतान जैनुल आब्दीन को कश्मीर की जनता 'बड़े शाह' के नाम से याद करती है। वह सभी धर्मों एवं भाषाओं का बड़ा सम्मान करते थे। उन्होंने फारसी और संस्कृत के ग्रंथों का अनुवाद कराया। सुलतान के संबंध अन्य देशों से बहुत ही मैत्रीपूर्ण थे और उनमें समय-समय पर बहुमूल्य भेंटों का आदान-प्रदान हुआ करता था। एक बार तैमूरलंग के विद्वान पुत्र समरकंद के शासक शाहरुख ने सुलतान के लिए बहुत से हाथी, हीरे, जवाहरात भेंट में भेजे। सुलतान ने धन्यवाद सहित उन्हें वापस करते हुए एक पत्र लिख भेजा—"यदि आप इनके स्थान पर मेरे लिए कुछ विद्वान तथा अरबी, फारसी और संस्कृत के ग्रंथ भेज सकें तो मुझे बड़ी खुशी होगी।" इससे यह ज्ञात होता है कि सुलतान की नजर में हीरे-जवाहरात से भी ज्यादा कीमत एक विद्वान की थी।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

मुझे सहायता नहीं चाहिए

ग्रीस में किलेंथिस नामक एक बालक था। वह एथेंस के प्रसिद्ध तत्त्ववेत्ता जीनो की पाठशाला में पढ़ता था। किलेंथिस बहुत ही गरीब था। उसके बदन पर पूरा कपड़ा नहीं था। पर पाठशाला में प्रतिदिन जो फीस देनी पड़ती थी, उसे किलेंथिस रोज नियम से दे देता था। पढ़ने में वह इतना तेज था कि दूसरे सब विद्यार्थी उससे ईर्ष्या करते।

कुछ लोगों ने यह संदेह किया कि किलेंथिस जो दैनिक फीस के पैसे देता है, सो कहीं से चुराकर लाता होगा, क्योंकि उसके पास तो फटे चिथड़े के सिवा और कुछ है नहीं और उन्होंने आखिर उसे चोर बताकर पकड़वा दिया।

मामला अदालत में गया। किलेंथिस ने निर्भयता के साथ हाकिम से कहा—"मैं बिलकुल निर्दोष हूँ। मुझ पर चोरी का दोष सर्वथा मिथ्या लगाया गया है। मैं अपने इस बयान के समर्थन में दो गवाह पेश करना चाहता हूँ।"

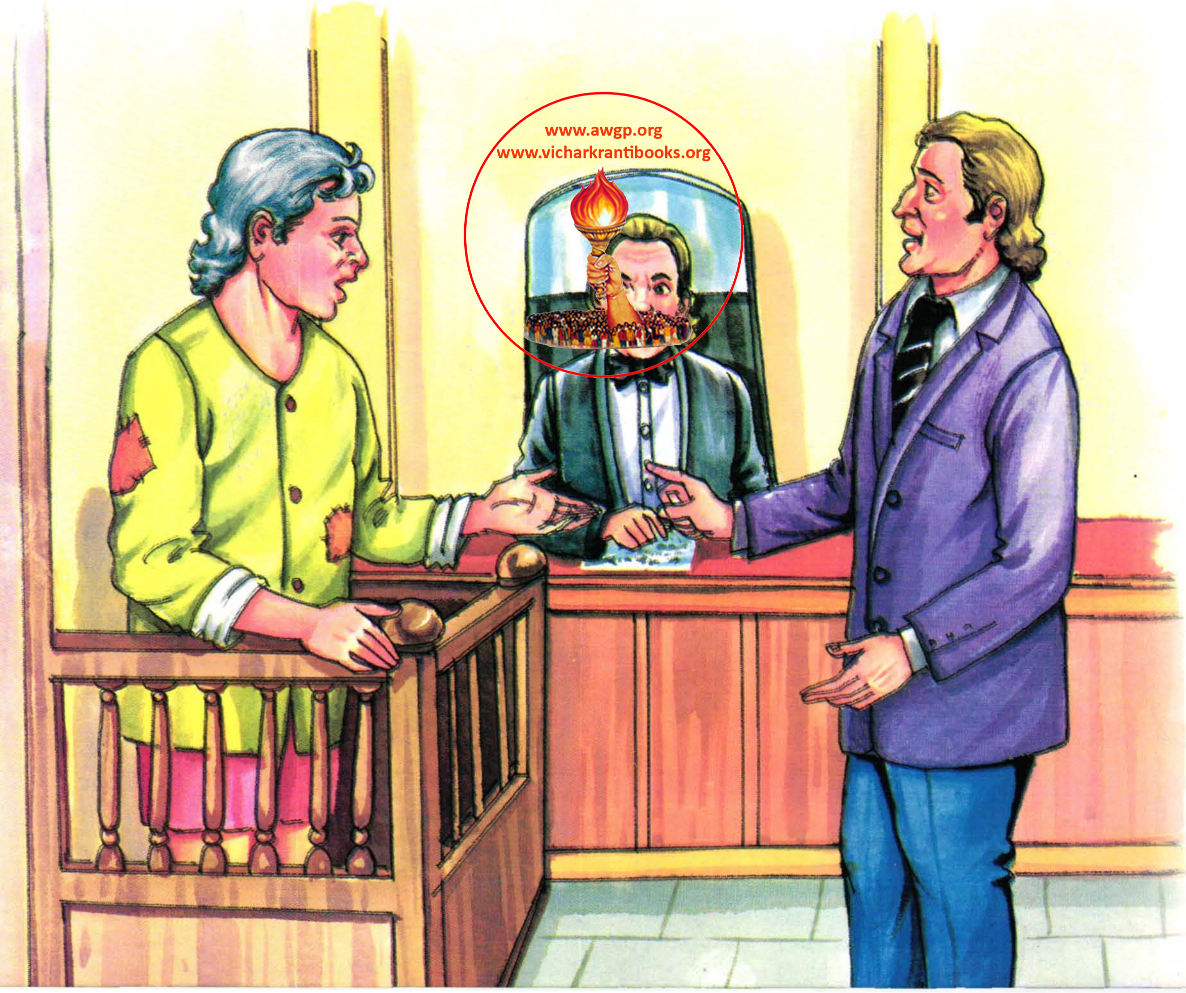

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

गवाह बुलाए गए। पहला गवाह था एक माली। उसने कहा—"यह बालक प्रतिदिन मेरे बगीचे में आकर कुएँ से पानी खींचता है और इसके लिए इसे कुछ पैसे मजदूरी के दिए जाते हैं।" दूसरी गवाही में एक बूढ़ा व्यक्ति आया, कहा—"मैं बूढ़ा हूँ। मेरे घर में कोई पीसने वाला नहीं है। यह बालक प्रतिदिन मेरे घर पर आटा पीस जाता है और बदले में अपनी मजदूरी के पैसे ले जाता है।"

इस प्रकार शारीरिक परिश्रम करके किलेंथिस कुछ आने प्रतिदिन कमाता था। वह उसी से अपना निर्वाह करता तथा पाठशाला की फीस भी भरता था। किलेंथिस की इस नेक कमाई की बात सुनकर हाकिम बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे इतनी सहायता देनी चाही कि जिससे उसको पढ़ने के लिए मजदूरी न करनी पड़े। परंतु उसने सहायता लेना स्वीकार नहीं किया और कहा—"मैं स्वयं परिश्रम करके ही पढ़ना चाहता हूँ। किन्हीं से दान लेने के स्थान पर स्वावलंबी बनकर आगे बढ़ना ही मेरे माँ-बाप ने मुझे सिखाया था।" बचपन में डाले गए संस्कार बालक के भावी जीवन में भी दृढ़ होते जाते हैं। ये संस्कार ही उसे महामानव बनाते हैं। ये बालक ही राष्ट्र का गौरव बढ़ाते हैं।

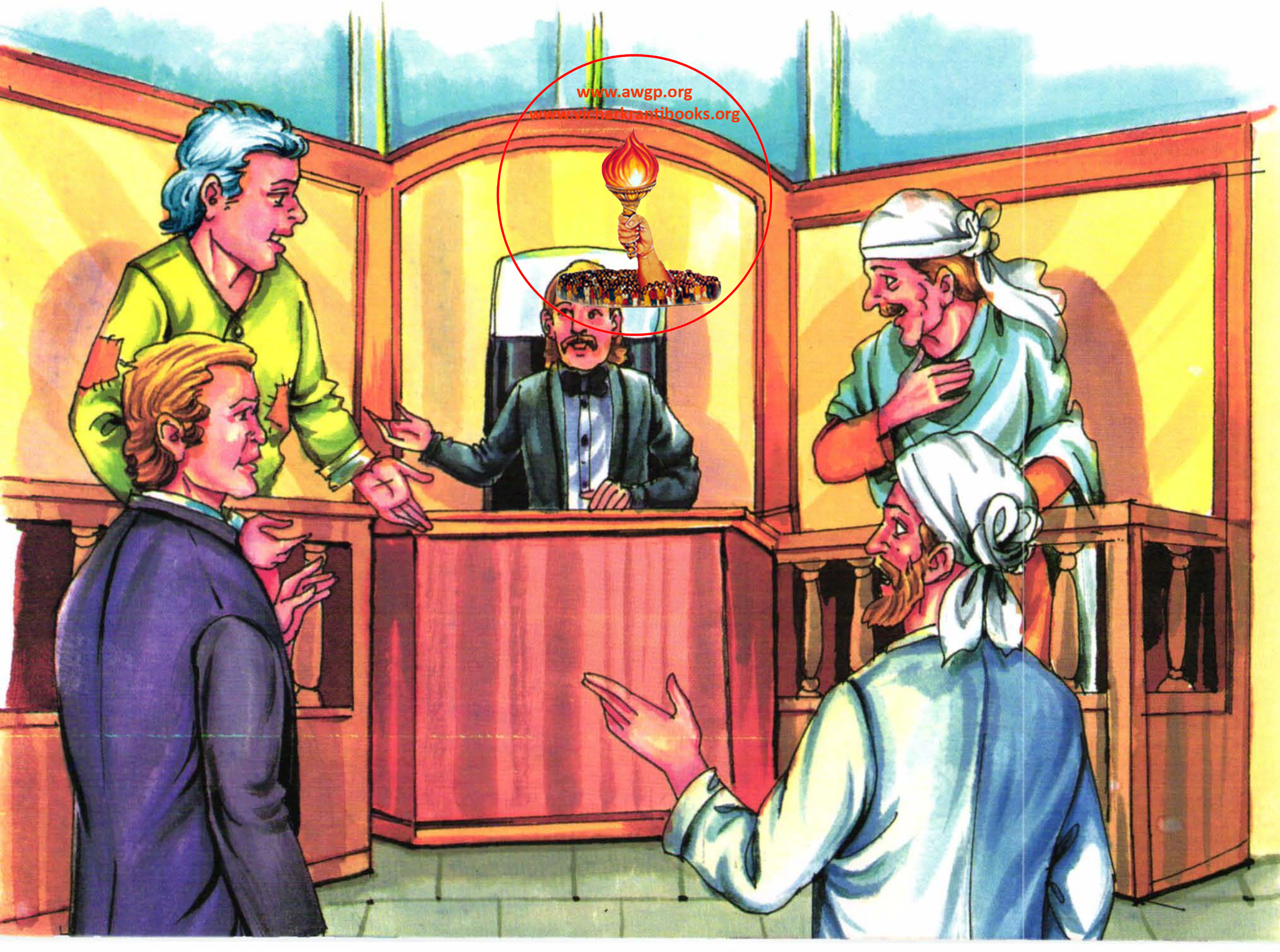

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मन शुद्ध तो सब शुद्ध

कुछ ब्राह्मण गंगा स्नान करने को आए थे। पानी बहुत गहरा था जिससे धार में उतरकर स्नान करने में उन्हें डर लग रहा था। उनके पास कोई पात्र भी नहीं था जिससे पानी लेकर वे नहाते। सभी बड़े असमंजस में थे। उसी तट पर संत कबीरदास जी भी स्नान कर रहे थे। उन्होंने अपना लोटा माँजकर एक व्यक्ति को देते हुए कहा—"इसे इन लोगों को दे दो। बेचारे स्नान कर लेंगे। इनके पास कोई पात्र भी नहीं है।" यह सुनकर सभी ब्राह्मण एकदम चिल्ला उठे—"नहीं भाई! इस जुलाहे का लोटा लेकर हमें अपवित्र नहीं होना है, इसे हमारे पास न लाओ।" कबीरदास ने कहा—"क्यों भाइयो! जब यह लोटा भी कई बार मिट्टी लगाकर साफ करने पर इस गंगाजल से पवित्र नहीं हुआ तो दुर्भावनाओं से भरे इस मानव शरीर की पवित्रता कैसे होगी स्नान से?" सभी ब्राह्मण एकदूसरे का मुँह देखने लगे। उत्तर उन्हें कुछ भी न सूझ पड़ा।

मन की शुद्धि ही सच्ची शुद्धि है। जब मन ही द्वेष-दुर्भावनाओं से भरा हुआ है, तो बाहर की शुद्धि क्या करेगी? संत कबीर ने अपने पूरे साहित्य में इस तथ्य पर बल दिया है।

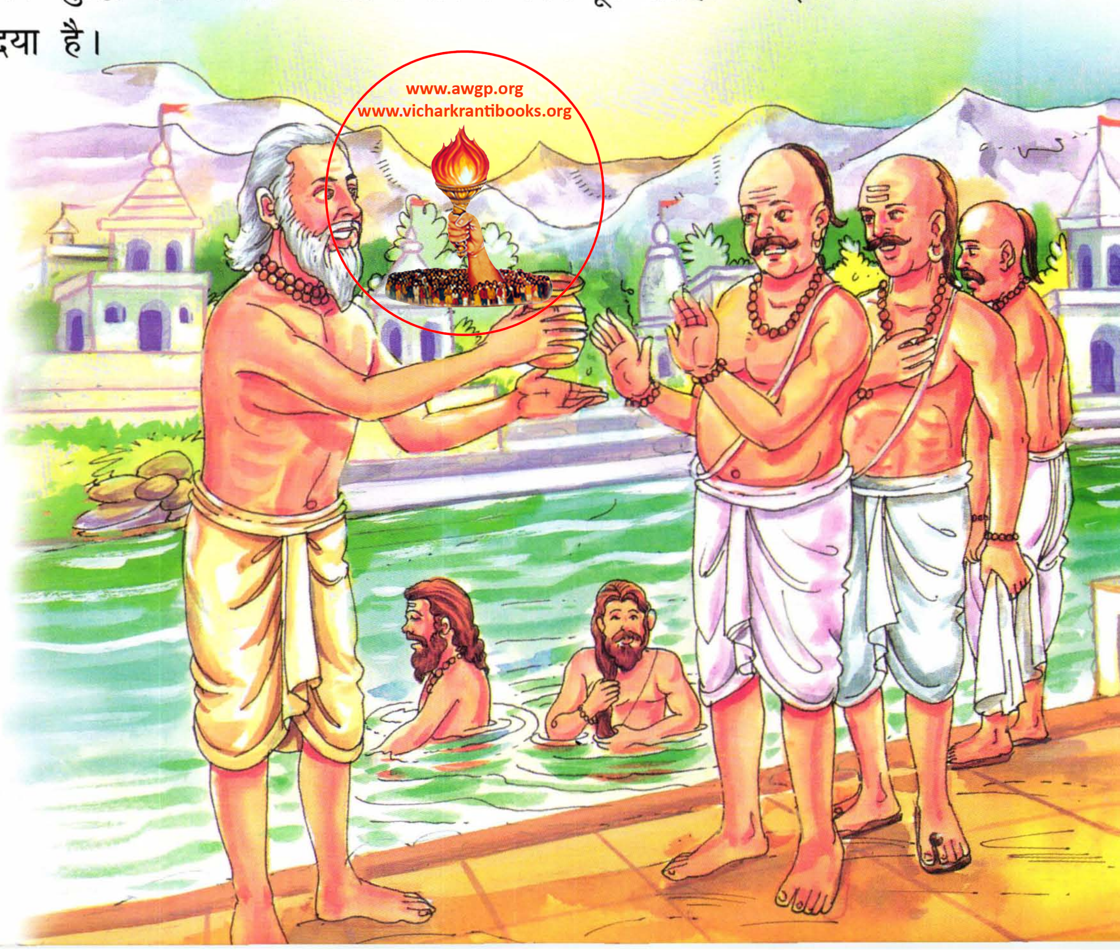

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

ताकत नहीं, सूझ-बूझ बड़ी है

एक घना जंगल था। उसमें सूअरों के कई परिवार थे। आक्रमणकारी सिंह एक ही था। वह जब चाहता, हमला करता और किसी भी मोटे या दुर्बल सूअर को चट कर जाता। झुंड के अन्य सदस्य घबराकर सिर पर पैर रखकर इधर-उधर भागते। एक दिन बूढ़े सूअर ने स्वजाति के सभी परिवारों को एकत्रित किया और कहा—"मरना है तो बहादुरी से क्यों न मरें? रहना है तो मिल-जुलकर क्यों न रहें?"

बात सभी को अच्छी लगी और वे उसके कहने पर चलने को तैयार हो गए। दूसरे दिन तगड़े सूअरों का एक दल गठित किया गया और योजना बनी कि आक्रमण की प्रतीक्षा न करके शेर की माँद पर चलें और वहाँ उस पर हल्ला बोल दिया जाए। नई योजना, नई हिम्मत और नई आशा से तगड़े सूअरों के हौसले बढ़ गए। सो वे बहादुरी के साथ चले और माँद में सोए शेर पर बिजली की तरह टूट पड़े। शेर को ऐसी मुसीबत का सामना इससे पहले कभी भी नहीं करना पड़ा था। वह घबरा गया और जान बचाकर इतनी तेजी से भागा कि यह देख तक न सका कि हमला करने वाले कौन और कितने हैं? भयाक्रांत शेर ने उस जंगल में भूतों का निवास सोचा और फिर कभी उधर न लौटने का निश्चय करते हुए दूर के वन में अपना डेरा डाल दिया। सूअरों के परिवार निश्चिंततापूर्वक रहने और वन विहार का आनंद लेने लगे। बड़ी ताकत नहीं सूझ-बूझ है, जिसे अपनाकर सूअरों को श्रेय मिला। इसके अभाव में सिंह को अपना राज्य अकारण ही छोड़ना पड़ा।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

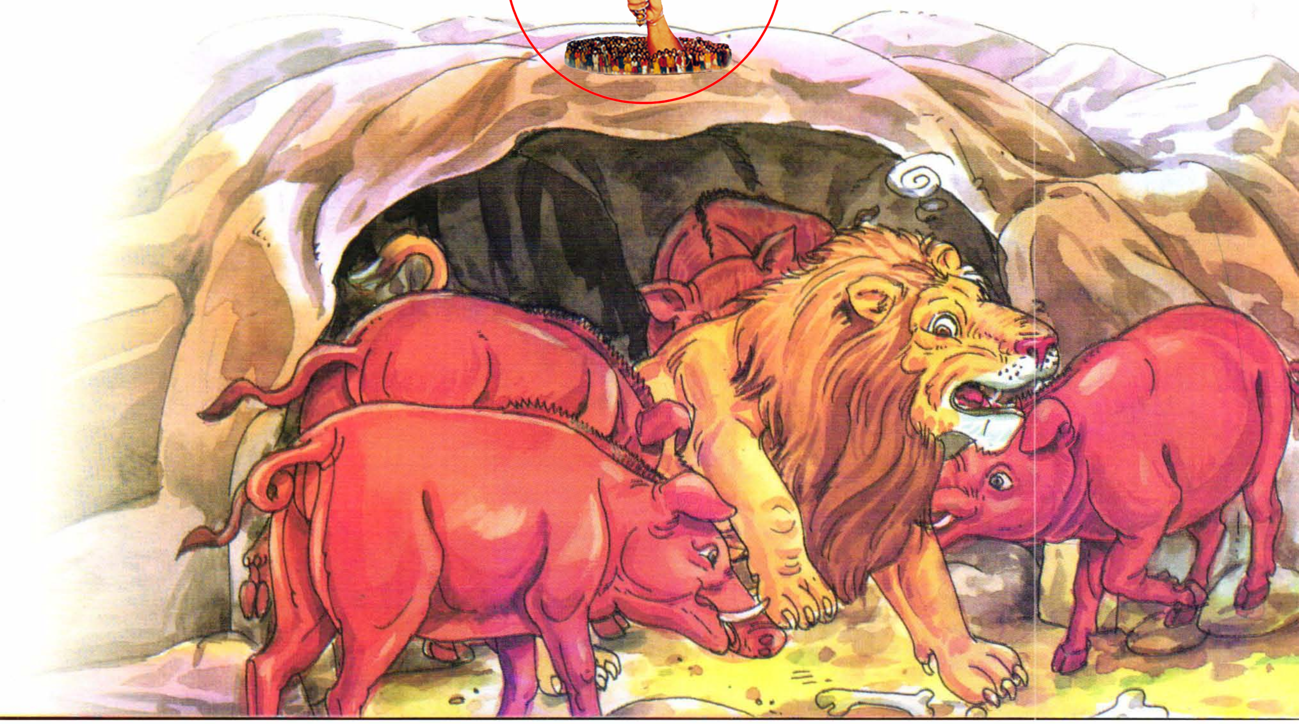

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

एण्ड्रयू कार्नेगी

एण्ड्रयू कार्नेगी के पिता एक स्कॉटिश जुलाहे थे। उनकी माता घर के काम समाप्त करके प्रतिदिन एक धोबी और एक मोची की दुकान पर काम करने जाती थी। तब घर का खरच चलता था। माता जब नौकरी पर काम करने जाती, तब उसका पिता उसे इस प्रकार विदा करता मानो नई दुलहन हो। दोनों में अगाध प्रेम था। एण्ड्रयू यह देखता तो उसके ऊपर गहरी छाप पड़ती। उसके पास एक ही कमीज थी। माता उसे रोज धोती और इस्त्री कर देती। उसे बचपन में पढ़ने का अवसर नहीं मिल सका। किंतु परिवार से मिले अच्छे संस्कारों ने उसके व्यक्तित्व को बनाया, तनिक बड़ा होते ही उसने तारघर में नौकरी कर ली। साथ ही तार देने और ग्रहण करने की विधि भी सीखता रहा। परीक्षा में पास हुआ और तारबाबू बन गया। उसके बाद उसने एक जमीन कृषि फार्म के लिए खरीदी।

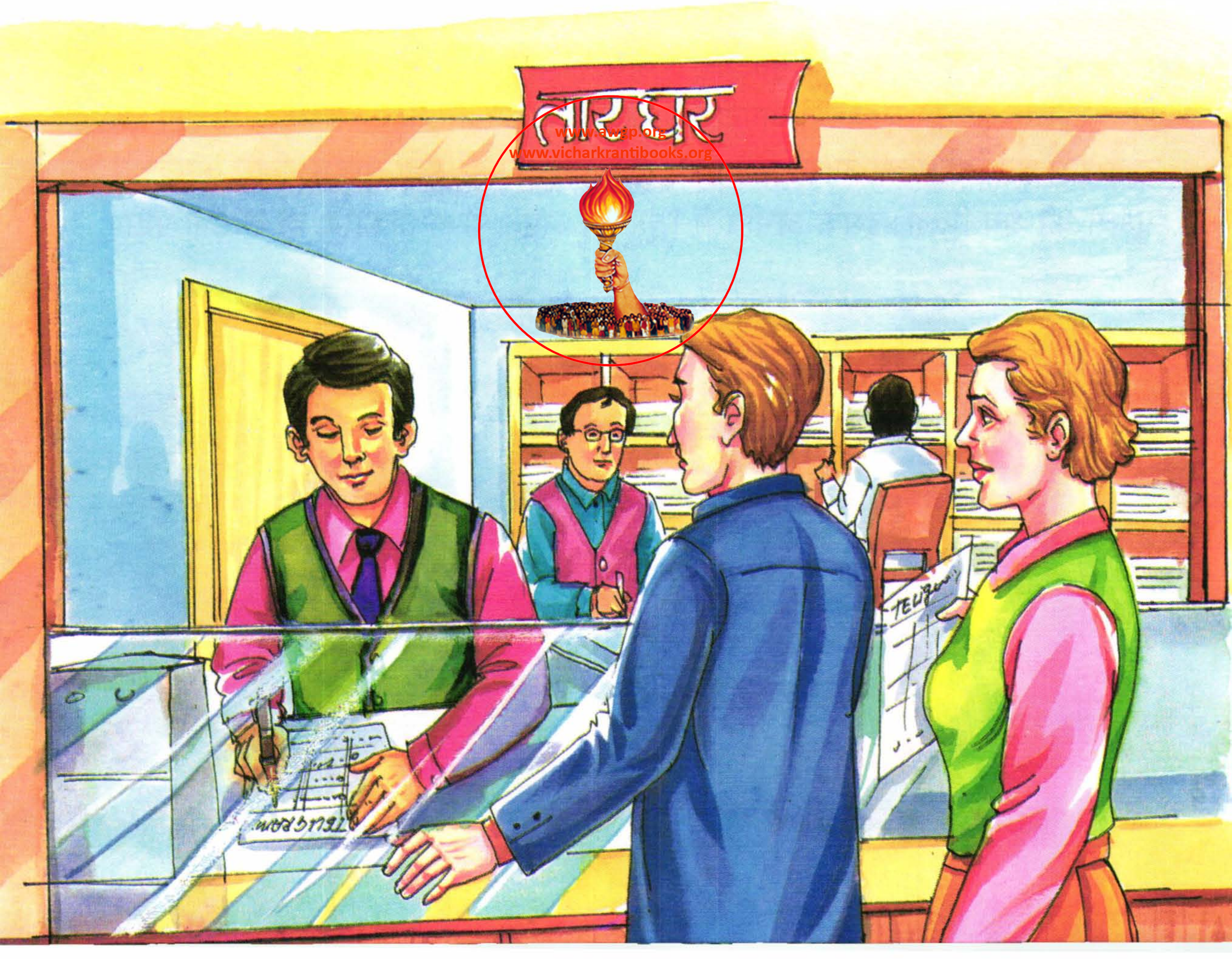

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

उसमें कृषि के अतिरिक्त एक तेल का कुआँ निकल आया। इस कारण उसकी व्यवसाय में आमदनी बढ़ गई। विवाह के कितने ही प्रस्ताव आए। उसने सभी यह कहकर अस्वीकार कर दिए कि अपनी माता के जीवित रहने तक मैं विवाह न कर उसकी सेवा करूँगा। विवाह में समय और मन दो ओर बँट जाएगा। माँ के मरने के बाद ५२ वर्ष की आयु में उसने शादी की। शादी देरी से करने पर लोगों के उलाहना देने पर कार्नेगी कहता—"विवाह जिन उद्देश्यों के लिए किया जाता है, उन सभी की पूर्ति मैंने यथासंभव की है।"

विवाह के बाद भी अनाथ बच्चों एवं साधनहीनों को वह विद्याध्ययन हेतु बराबर दान देता रहा। उसने १५० करोड़ डालर की राशि इन्हीं कार्यों में खरच की। मरते समय कर्जदारों के कागजात जलाकर सबको ऋणमुक्त कर दिया। उसकी महानता ने सभी को नतमस्तक कर दिया था। उसकी मृत्यु पर अनगिनत व्यक्तियों का हृदय दुखी हो गया। उन्होंने अनुभव किया कि जैसे उनका निकट का कोई आत्मीय जन ही विदा हो गया है। परोपकारी व्यक्ति सदा दूसरों से प्रेम और सम्मान पाते हैं।

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चट्टान का कथन

एक चट्टान के पास आकर एक नाव रुकी तो उसमें बैठे नाविक ने चट्टान से पूछा—"तुम पर चारों ओर से चोट लग रही हैं फिर भी तुम निराश नहीं हो ?" और तब चट्टान की आत्मा धीरे से बोली—"तात, निराशा और मृत्यु दोनों एक ही वस्तु के दो पहलू हैं, हम निराश हो गए होते, तो दूर से तैरकर आते हुए थके व्यक्तियों को एक क्षण का ही सही विश्राम देकर जो हमें आनंद मिलता है, वह हमें कैसे मिलता और उनका स्वागत करने से चूक न जाते।"

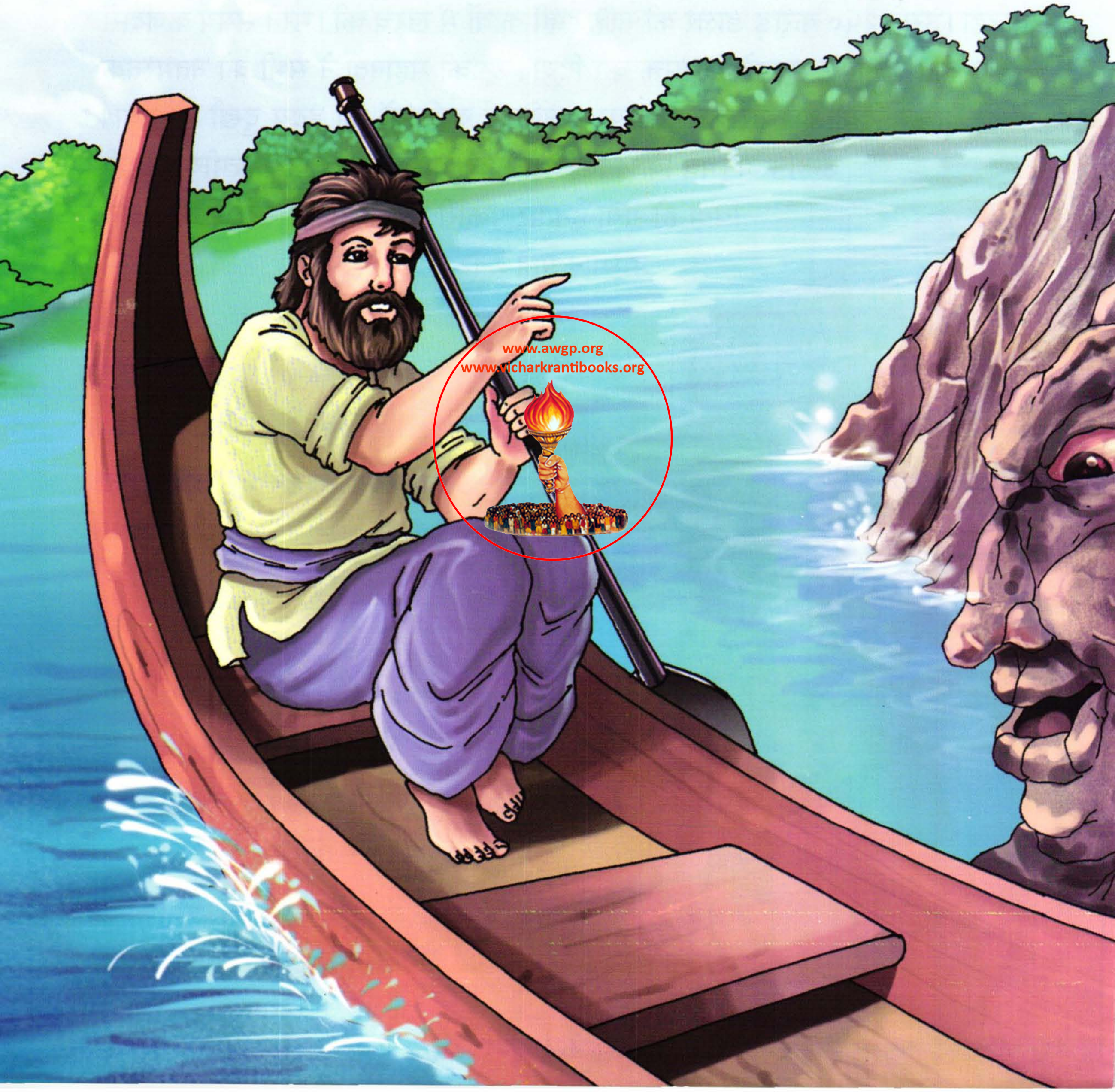

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

राजेंद्र बाबू ने जूते लौटाए

स्वर्गीय राष्ट्रपति डॉ० राजेंद्र प्रसाद एक बार कई राज्यों का दौरा करने के बाद राँची पहुँचे। वहाँ उनके पैर में दरद होने लगा। पता चला कि उनके जूतों के तल्ले घिस गए तथा कीलें ऊपर उभर आई हैं। राजेंद्र बाबू स्वयं मरे हुए जानवरों की खाल से बने जूतों का ही प्रयोग करते थे। उनके शिविर से कुछ दूर ही अहिंसक चर्मालय केंद्र था। वहाँ सचिव को भेजकर नया जोड़ा मँगवाया। जूते पाँव में डालकर उन्होंने कीमत पूछी, तो उत्तर मिला—"उन्नीस रुपये।"

"गत वर्ष तो ऐसे जूते ग्यारह रुपये में लिए थे।"

"ग्यारह रुपये वाले जूते इनसे कमजोर तथा कठोर हैं।"—सचिव ने उत्तर दिया।

राजेंद्र बाबू को संतोष नहीं हुआ। उन्होंने कहा—"जब ग्यारह रुपये के जूते से काम चल सकता है,तब उन्नीस रुपये क्यों खरच किए जाएँ? अत: इसे लौटाकर ग्यारह रुपये वाला जोड़ा मँगवाओ।"

मितव्ययी व्यक्ति की सभी प्रशंसा करते हैं और वे ही महान बनते हैं।

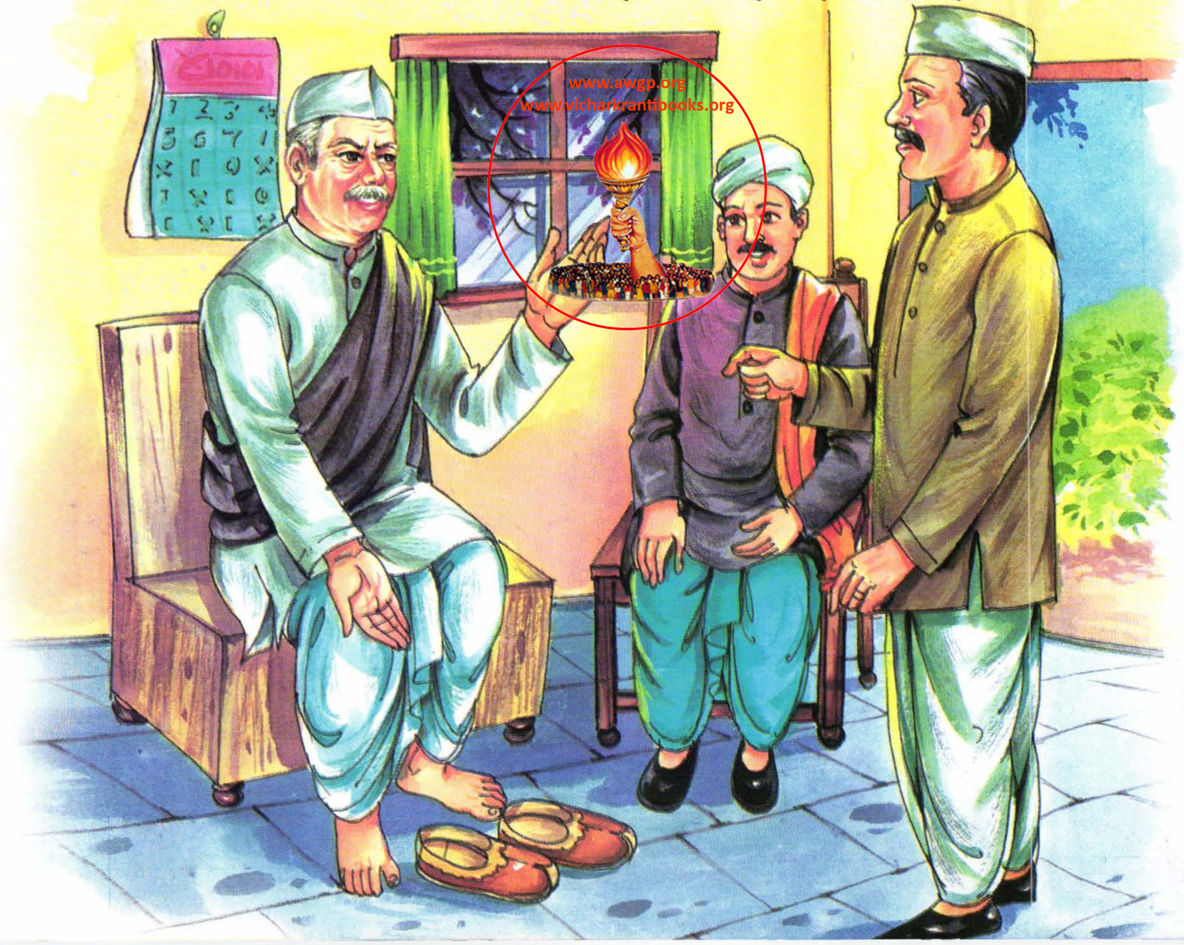

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

तिलक की कर्त्तव्यनिष्ठा

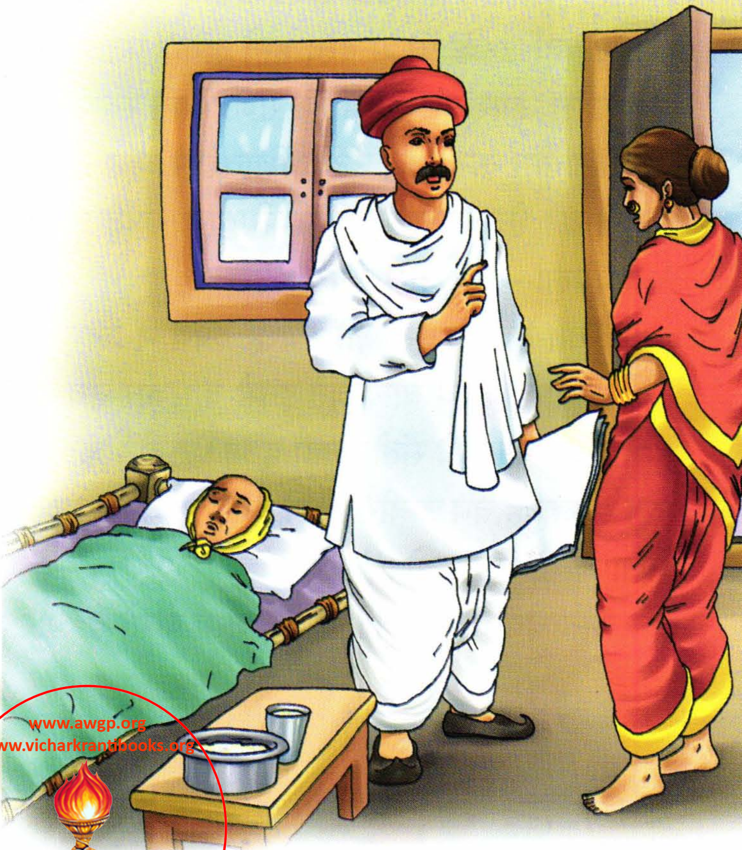

एक बार की बात है, पूना में भयंकर प्लेग फैला हुआ था। लोकमान्य तिलक का बड़ा पुत्र प्लेग से पीड़ित हो गया था। पुत्र की दशा चिंताजनक होने के बावजूद तिलक 'केसरी' अखबार के अंक का अधूरा काम पूरा करने के लिए कार्यालय जाने लगे। किसी ने उन्हें टोका— "लड़का मौत से जूझ रहा है। अगर आप कार्यालय न जाएँ तो क्या काम न चलेगा?"

www.awgp.org
www.vicharkrantibooks.org

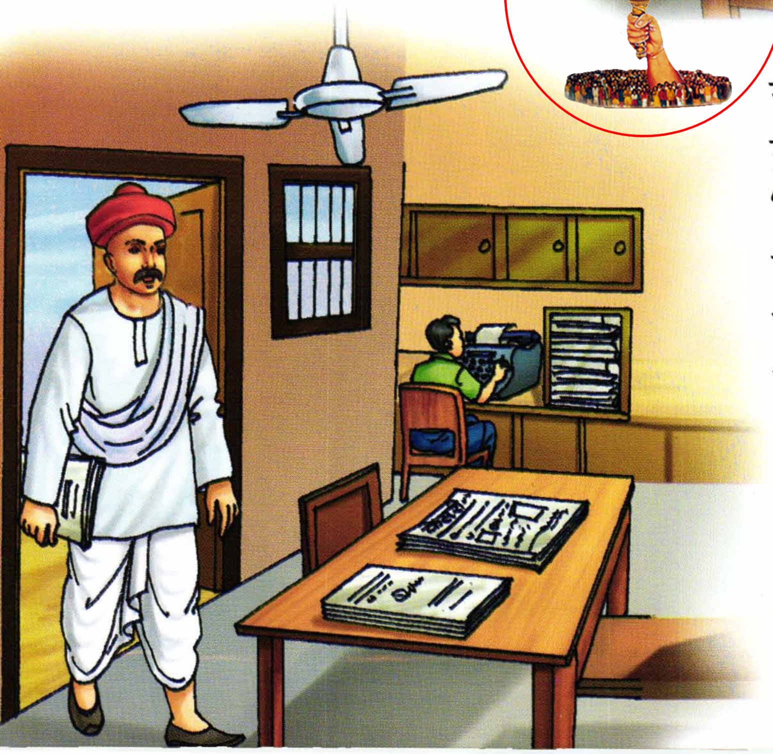

गंभीर एवं संयत स्वर में तिलक ने उत्तर दिया—"सारा महाराष्ट्र 'केसरी' अखबार की प्रतीक्षा में बैठा है, तब मैं कार्यालय नहीं जाऊँ, इस प्रकार काम नहीं चलेगा।" और वे कार्यालय गए तथा समय पर अखबार निकाला।

मोह पर अंकुश लगाकर कर्त्तव्य पथ पर चल पड़ने के साहस ने ही उन्हें लोकमान्य का गौरव दिलाया।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

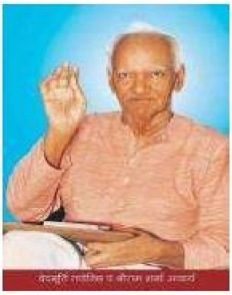

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।
- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्दघोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऎसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org